★ स्व० कविवर श्री वृन्दावनजी कृत ★

वर्त्तमान चतुर्विंशति जिन पूजा

प्रकाशक:—

वीर पुस्तक भण्डार

श्री वीर प्रेस,

मणिहारों का रास्ता, जयपुर।

द्वितीयबार १०००] भाद्रपद सं० २०१७ [मूल्य १।।) रुपया

विषय सूची

❀ श्री वीतरागाय नमः ❀

काशी निवासी स्वर्गीय कविवर वृन्दावनजी कृत

वर्तमानचतुर्विंशतिजिनपूजा

❀ दोहा ❀

वंदौं पांचौं परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघनहरण मंगलकरन, पूरण परम प्रकाश ॥ १ ॥
चौबीसों जिनपति नमौं, नमौं शारदा माय।
शिवमगसाधक साधु नमि, रचौं पाठ सुखदाय ॥ २ ॥

नामावली स्तोत्र ।

छन्द नथमालिनी, तथा तामरस व चंडी—१६ मात्रा

जय जिनंद सुखकन्द नमस्ते । जय जिनन्द जितफन्द नमस्ते ॥
जय जिनन्द वरबोध नमस्ते । जय जिनन्द जितक्रोध नमस्ते ॥ १ ॥
पापताप हर इन्दु नमस्ते । अर्हवरनजुतबिंदु नमस्ते ॥
शिष्टाचार विशिष्ट नमस्ते । इष्ट मिष्ट उत्कृष्ट नमस्ते ॥ २ ॥
पर्म धर्म वर शर्म नमस्ते । मर्मभर्म—घन घर्म नमस्ते ॥
दृग्विशाल वरभाल नमस्ते । हृदिदयाल गुनमाल नमस्ते ॥ ३ ॥
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध नमस्ते । ऋद्धिसिद्धिवरवृद्धि नमस्ते ॥
वीतराग विज्ञान नमस्ते । चिद्विलास धृतध्यान नमस्ते ॥ ४ ॥
स्वच्छ गुणांबुधि रत्न नमस्ते । सत्त्वहितंकरयत्न नमस्ते ॥
कुनयकरी मृगराज नमस्ते । मिथ्याखगवरबाज नमस्ते ॥ ५ ॥
भव्यभवोद धितार नमस्ते । शर्मामृतसितसार नमस्ते ॥

दरश-ज्ञान-सुख-वीर्य नमस्ते । चतुरानन धरधीर्य नमस्ते ॥ ६ ॥
हरि हर ब्रह्मा विष्णु नमस्ते । मोहमर्द मनु जिष्णु नमस्ते ॥
महादान महभोग नमस्ते । महाज्ञान महजोग नमस्ते ॥ ७ ॥
महा उग्र तप-शूर नमस्ते । महामौन गुणभूरि नमस्ते ॥
धर्मचक्रि वृषकेतु नमस्ते । भवसमुद्रशतसेतु नमस्ते ॥ ८ ॥
विद्याईश मुनीश नमस्ते । इंद्रादिकनुतशीश नमस्ते ॥
जय रत्नत्रयराय नमस्ते । सकल जीवसुखदाय नमस्ते ॥ ९ ॥
अशरनशरन-सहाय नमस्ते । भव्य सुपंथ लगाय नमस्ते ॥
निराकार साकार नमस्ते । एकानेक-अधार नमस्ते ॥ १० ॥
लोकालोक विलोक नमस्ते । त्रिधा सर्व गुनथोक नमस्ते ॥
सल्लदल्लदल-मल्ल नमस्ते । कल्लमल्ल जितछल्ल नमस्ते ॥ ११ ॥
भुक्तिमुक्ति-दातार नमस्ते । उक्तिसुक्ति शृङ्गार नमस्ते ॥

गुन अनंत भगवंत नमस्ते । जय जय जय जयवंत नमस्ते ॥१२॥

इति पठित्वा जिनचरणाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री समुच्चयचतुर्विंशति जिनपूजा ।

छन्द कवित्त ।

वृषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय ।
चन्द पुहुप शीतल श्रेयांश नमि, वासुपूज पूजितसुरराव ॥
विमल अनंत धरम जस उज्ज्वल, शांति कुन्थु अर मल्लि मनाय ।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्वप्रभु, वर्द्धमानपद पुष्प चढ़ाय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अष्टक

(चाल:—द्यानतरायकृत नंदीश्वरद्वीपाष्टककी तथा गरवा राग आदि अनेक चालों में)

मुनिमनसम उज्ज्वल नीर, प्राशुक गंध भरा ।

भरि कनककटोरी धीर, दीनों धार धार ।
चौबीसौं श्रीजिनचंद, आनंदकंद सही ।
पदजजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
गोशीर कपूर मिलाय, केशररंग भरी ।
जिनचरननदेत चढ़ाय, भवआतापहरी ॥ चौ० ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।
तंदुल सित सोम समान, सुन्दर अनियारे ।
मुक्ताफलकी उनमान, पुंज धरौं प्यारे ॥ चौ० ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।
वर कंज कदंब करंड, सुमनसुगंध भरे ।
जिन अग्र धरौं गुनमंड, कामकलंक हरे ॥ चौ० ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं श्रवृषभादिवीरान्तेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

मनमोहन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने ।
रसपूरित प्राशुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने ॥ चौ० ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
तमखंडन दीप जगाय, धारों तुम आगे ।
सब तिमिरमोह क्षय जाय, ज्ञानकला जागै ॥ चौ० ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
दश गंध हुतासन मांहि, हे प्रभु खेवत हों ।
मिस धूम करम जरि जाहिं, तुम पद सेवत हों ॥ चौ० ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
शुचि पक्व सुरस फल सार, सब ऋतुके ल्यायौ ।
देखत दृग-मन को प्यार, पूजत सुख पायौ ॥ चौ० ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
जल फल आठों शुचि सार, ताको अर्घ करों ।

तुमको अरपौं भवतार, भवतरि मोक्ष वरौं ॥ चौ० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला ।

दोहा— श्रीमत तीरथनाथपद, माथ नाय हितहेत ।
गावों गुणमाला अबै, अजर अमरपद देत ॥ १ ॥

घत्ता—जय भवतमभंजन जनमनकंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छ करा ।
शिवमगपरकाशक अरिगननाशक, चौबीसों जिनराज वरा ॥२॥

पद्धरी-जय ऋषभदेव ऋषिगन नमंत । जय अजित जीतवसुअरि तुरंत ।
जय संभव भवभय करत चूर । जय अभिनंदन आनंदपुर ॥ ३ ॥
जय सुमति सुमतिदायक दयाल । जय पद्म पद्मद्युति तन रसाल ।
जय जय सुपास भवपासनाश । जय चंदचंदतनदुतिप्रकाश ॥ ४ ॥
जय पुष्पदंत दुतिदंत सेत । जय शीतल शीतल गुननिकेत ॥
जय श्रेयनाथ नुत सहसभुज्ज । जय वासवपूजित वासुपुज्ज ॥५॥

जय विमल विमलपददेनहार। जय जय अनंत गुनगन अपार ॥
जय धर्म धर्म शिवशर्म देत। जय शांति २ पुष्टी करेत ॥ ६ ॥
जय कुंथु कुंथुवादिक रखेय। जय अर जिन वसुअरि क्षय करेय ॥
जय मल्लिमल्ल हतमोहमल्ल। जय मुनिसुव्रत व्रतसल्लदल्ल ॥ ७ ॥
जय नमि नित वासवनुत सपेम। जय नेमनाथ वृषचक्रनेम ॥
जय पारसनाथ अनाथनाथ। जय वर्द्धमान शिवनगरसाथ ॥ ८ ॥

घत्ता:—चौबीस जिनंदा आनंदकंदा, पापनिकंदा सुखकारी।
तिनपद जुगचंदा उदय अमंदा, वासववंदा हितधारी ॥ ९ ॥

ॐ ह्री श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा—भुक्तिमुक्तिदातार, चौबीसौं जिनराज वर।
तिनपद मनवचधार, जो पूजै सो शिव लहै ॥ १० ॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

इति श्री समुच्चयचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ॥ १ ॥

श्रीआदिनाथ जिनपूजा ।

अडिल्लः–परम पूज्य वृषभेप स्वयंभू देवजू । पितानाभि मरुदेवि करैं
सुर सेवजू । कनकवरण तन तुंग धनुष पनशत तनों ।
कृपासिंधु इत आइ तिष्ठ मम दुख हनों ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट

[अष्टक] [छंद द्रुतविलंबित तथा सुन्दरी]

हिमवनोद्भव-वारि सुधारिकैं । जजत हौं गुनबोध उचारिकैं ॥
परमभाव सुखोदधि दीजिए । जन्ममृत्युजरा क्षय कीजिये ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा ।

मलय चन्दन दाह निकंदनं । घसि उभै करमें करि वंदनं ॥

जजत हौं प्रशमाश्रम दीजिये। तपततापत्रिधा छय कीजिये ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल तंदुल खंडविवर्जितं। सित निशेष-हिमामियतर्जितं॥
जजत हौं तसु पुंज धरायजी। अखय संपति द्यो जिनरायजी ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चंपक केतकि लीजिये। मदन—भंजन भेट धरीजिये॥
परमशील महा सुखदाय हैं। समरसूल निमूल नशाय हैं ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मोदनमोदक लीजिये। हरनभूख जिनेश जजीजिये॥
सकल आकुल-अंतक-हेतु हैं। अतुल शांतसुधारस देतु हैं ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निविड मोह महातम छाइयो। स्वपरभेद न मोहि लखाइयो॥

हरनकारन दीपक तासके । जजत हों पद केवल भासके ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अगर चंदन आदिक लेयकें । परम पावन गंध सुखेयकें ॥

अगनिसंग जरैं मिस धूमके । सकल कर्म उड़ैं यह धूमके ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरस पक्व मनोहर पावने । विविध ले फल पूज रचावने ॥

त्रिजगनाथ कृपा अब कीजिये । हमहिं मोक्ष महाफल दीजिये ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जलफलादि समस्त मिलायकैं । जजत हौं पद मंगल गायकैं ॥

भगत वत्सल दीन दयालजी । करहु मोहि सुखी लखि हालजी ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

[पंचकल्याणक] [छन्द द्रुतविलंबित तथा सुन्दरी]

असित दोज अषाढ़ सुहावनी । गरभमंगल को दिन पावनी ॥

हरि–सची पितु–मातहिं सेवही । जजत हैं हम श्रीजिनदेवही ॥१॥

ॐ ह्रीं अाषाढकृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं नि० ।

असित चैत सुनौमि सुहाइयो । जनममंगल तादिन पाइयो ॥
हरि महागिरिपै जजियो तवै । हम जजैं पदपंकजको अबै ॥२॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं नि० ।

असित नौमि सुचैत धरे सही । तपविशुद्ध सबै समता गही ॥
निजसुधारससों भर लाइयो । हम जजैं पद अर्घ चढ़ाइयो ॥३॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं नि० ।

असित फागुन ग्यारसि सोहनों । परम केवलज्ञान जग्यो भनों ॥
हरि समूह जजें तहँ आइकैं । हम जजें इत मंगल गाइकैं ॥४॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं नि० ।

असित चौदसि माघ विराजई । परम मोक्ष सुमंगल साजई ॥

हरि-समूह जजैं कैलाशजी । हम जजैं अति धार हुलागजी ॥५॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं नि० ।

अथ जयमाला ।

घत्ता—जय जय जिनचंदा, आदिजिनंदा, हनि भवफंदा-कंदा जू ।
वासव-शत-वंदा, धरि आनंदा, ज्ञान अमंदा नंदा जू ॥१॥

छन्द मोतियदाम ।

त्रिलोकहितंकर पूरन पर्म । प्रजापति विष्णु चिदातम धर्म ॥
जतीसुर ब्रह्मविदांबर बुद्ध । वृषंक अशंक क्रियाम्बुधि शुद्ध ॥२॥
जबै गर्भागम-मंगल जान । तबै हरि हर्ष हिये अति आन ॥
पिता जननीपद-सेव करेय । अनेक प्रकार उमंग भरेय ॥३॥
जये जब ही तब ही हरि आय । गिरींद्रविषै किय न्हौन सुजाय ॥
नियोग समस्त किये तित सार । सुलाय प्रभू पुनि राज-अगार ॥४॥

पिता-कर सोंपि कियो तित नाट । अमंद अनंद समेत विराट ॥
सुथान पयान कियो फिर इन्द । इहां सुरसेव करैं जिनचन्द ॥५॥
कियो चिरकाल सुखाश्रित राज । प्रजा सब आनंदको तित साज ॥
सुलिप्त सुभोगनिमें लखि जोग । कियो हरि ने यह उत्तम योग ॥६॥
निलाञ्जन नाच रच्यो तुम पास । नवों रसपूरित भाव विलास ॥
बजै मिरदंग द्रमं द्रम जोर । चले पग झारि झनांझन झोर ॥७॥
घनाघन घंट करै धुनि मिष्ट । बजे मुहचंग सुरान्वित पुष्ट ।
खड़ी छिन पास छिन हि आकाश । लघू छिन दीरघ आदि विलास ॥८॥
ततच्छन ताहि विलै अविलोय । भये भवतैं भयभीत बहोय ॥
सुभावत भावन बारह भाय । तहां दिवब्रह्म-ऋषीश्वर आय ॥९॥
प्रबोध प्रभू सु गये निज धाम । तबै हरि आय रची शिवकाम ॥
कियो कचलोंच पिराग अरन्य । चतुर्थम ज्ञान लह्यो जगधन्य ॥१०॥

धरयो जिनेंद्र तब योग प्रमान। दियो श्रेयांस तिन्हैं इखदान।
भयो जब केवलज्ञान छमास। समोसृत ठाठ रच्यो सु धनेंद्र ॥११॥
तहां वृषतत्त्व प्रकाशि अशेष। कियो फिर निर्भयथान प्रवेश॥
अनंत गुनातम श्रीसुखराश। तुमैं नित भव्य नमैं शिवआश॥१२॥

घत्ता—यह अरज हमारी, सुनि त्रिपुरारी, जनम जरा मृति दूर करो।
शिवसम्पति दीजे, ढील न कीजे, निज लख लीजे कृपा धरो।१३।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्या-जो ऋषभेश्वर पूजै, मनवचतनभाव शुद्ध कर प्रानी॥
सो पावे निश्चैसौं, भुक्ती औ मुक्ति सार सुखथानी॥१४॥

इत्य शोर्वाद। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

इति श्रीआदिनाथजिनपूजा समाप्ता॥२॥

श्री अजितनाथ जिनपूजा ।

छन्द—अशोकपुष्पमंजरी दंडक, अर्धमंजरी तथा अर्द्धनाराच ।

त्याग वैजयन्त सार सारधर्मके अधार,
जन्मधार धीर नम्र सुष्टु कौशलापुरी ।
अष्टदुष्ट नष्टकार मातु वैजयाकुमार,
आयु पूर्व लक्ष दक्ष है बहत्तरै पुरी ॥
ते जिनेश श्रीमहेश शत्रुके निकंदनेश,
अत्र हेरिये सुदृष्टि भक्तपै कृपा पुरी ।
आय तिष्ठ इष्टदेव मैं करों पदाब्जसेव,
पर्मशर्मदाय पाय आय शर्न आपुरी ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

[अष्टक] [छन्द त्रिभंगी अनुप्रासक ।]

गंगाहृदपानी निर्मल आनी, सौरभसानी शीतानी ।
तसु ढारत धारा तृपानिवारा, शांतागारा सुखदानी ॥
श्रीअजितजिनेशं नुतनाकेशं, चक्रधरेशं खग्गेशं ।
मनवांछितदाता त्रिभुवनत्राता, पूजों ख्याता जग्गेशं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुचि चन्दन बावन तापमिटावन, सौरभ पावन घसि ल्यायो ।
तुम भवतपभञ्जन हौ शिवरञ्जन, पूजारञ्जन मैं आयो ॥२॥ श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

सितखण्डविवर्जित निशिपतितर्जित, पुञ्ज विधर्ज्जित तंदुलको ।
भवभावनिखर्जित शिवपदसर्जित, आनन्दभर्जित दन्दलको ॥३॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

मनमथमदमन्थन धीरजग्रन्थन, ग्रन्थनिग्रन्थन ग्रन्थपती ।

तवपादकुशेसे आदिकुशेसे, धारि अशेसे अर्चयती ॥ ४ ॥ श्री० ॥
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

आकुलकुलवारन थिरताकारन, छुधाविदारन चरु लायो ।
षटरसकरभीने अन्न नवीने, पूजन कीने सुख पायो ॥५॥ श्री०
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपकमणिमाला जोतउजाला, भरि कनथाला हाथ लिया ।
तुम भ्रमतमहारी शिवसुखकारी, केवलधारी पूज किया ॥६॥ श्री०
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अगरादिकचूरं परिमलपूरं, खेवत क्रूरं कर्म जरैं ।
दशहूँ दिशि धावत हर्ष बढ़ावत, अलिगुञ्जावत नृत्य करैं ॥७॥ श्री.
ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

बादाम नरंगी श्रीफल चंगी, आदि अभंगीसौं अरचौं ।
सब विघनविनाशै सुखपरकाशै, आतम भासै भौविरचौं ॥८॥ श्री०

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जलफल सब सज्जै बाजत बज्जे, गुनगनरज्जै मनमज्जै ।
तुव पदजुग मज्जै सज्जन जज्जै, ते भवभज्जै निजकज्जै ॥९॥श्री०॥

[पंच कल्याणक अर्घ] [छन्द द्रुतमध्यकं १६ मात्रा ।]

जेठ असेत अमावशि सोहै । गर्भदिना नंद सो मनमोहै ॥
इन्द्र फनिंद्र जजें मनलाई । हम पद पूजत अर्घ चढ़ाई ॥१॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णामावस्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्व० ।

माघसुदी दशमी दिन जाये । त्रिभुवन में अति हर्ष बढ़ाये ॥
इन्द्र फनिंद्र जजें तित आई । हम नित सेवत हैं हुलसाई ॥२॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशमीदिने जन्ममंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व० ।

माघसुदी दशमी तप धारा । भव तन भोग अनित्य विचारा ॥
इन्द्र फनिन्द्र जजें तित आई । हम इत सेवत हैं सिरनाई ॥३॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लादशमीदिने तपमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

पौषसुदी तिथि चौथ सुहायो । त्रिभुवनभानु सु केवल जायो ॥
इन्द्र फनिंद्र जजैं तित आई । हम पद पूजत प्रीत लगाई ॥४॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लाचतुर्थीदिने ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

पंचमि चैत सुदी निरवाना । निजगुनराज लियो भगवाना ।
इन्द्र फनिंद्र जजैं तित आई । हम पद पूजत हैं गुनगाई ॥५॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लापंचमीदिने मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व० ।

जयमाला ।

दोहा—अष्ट दुष्ट को नष्ट करि, इष्ट मिष्ट निज पाय ।
शिष्ट धर्म भाख्यो हमें, पुष्ट करो जिनराय ॥१॥

छंद पद्धड़ी १६ मात्रा ।

जय अजित देव तव गुण अपार । पै कहूँ कछुक लघु बुद्धि धार ।
दश जनमत अतिशय बलअनंत । शुभलच्छन मधुर वचन भनंत ॥

संहनन प्रथम मलरहित देह । तनसौरभ शोणितस्वेत जेह ॥
वपु स्वेदविना महरूपधार । समचतुर धरें संठान चार ॥३॥
दश केवल गमनश्रकाशदेव । सुरभिच्छ रहै योजन सतेव ॥
उपसर्गरहित जिनतन सु होय । सब जीव रहितबाधा सु जोय ॥४॥
मुखचारि सर्वविद्याश्रधीश । कवलाश्रहारवर्जित गरीश ॥
छायाविनु नख कच बढ़े नाहिं । उन्मेष टमक नहिं भ्रकुटिमाहिं ॥५॥
सुरकृत दशचार करौं बखान । सब जीव मित्रता भावजान ॥
कंटकविन दर्पणवत सुभूमि । सब धान्य वृच्छ फल रहे भूमि॥६॥
पटरितु के फूल फले निहार । दिशि निर्मल जिय श्रानंदधार ॥
जहं शीतल मंद सुगंध वाय । पदपंकजतल पंकज रचाय ॥७॥
मलरहित गगन सुर जय उचार । वरषा गंधोदक होत सार ॥
वर धर्मचक्र श्रागें चलाय । वसुमंगलजुत यह सुर रचाय ॥८॥

सिंहासन छत्र चमर सुहात। भामंडलछवि वरनी न जात ॥
तरु उच्च अशोकरु सुमनवृष्टि। धुनि दिव्य और दुंदुभी मिष्ट॥९॥
दृग ज्ञान शर्म बीरज अनंत। गुण छियालीस इम तुम लहन्त ॥
इन आदि अनन्ते सुगुन धार। वरनत गणपति नहिं लहत पार।१०
तव समवशरनमहँ इन्द्र आय। पद पूजत वसुविधि दरब लाय ॥
अति भगतिसहित नाटक रचाय। ताथेइ थेइ थेइध्वनि रही छाय।११।
पग नूपुर झननन झनननाय। तनननननन तननन तान गाय ॥
घननन नन नन घंटा घनाय। छम छम छम छम घुंघरू वजाय।१२
दृम दृम दृम दृम दृम मुरज ध्वान। संसाग्रदि सरंगि सुर भरत तान।
झट झट झट अटपट नटत नाट। इत्यादि रच्यो अद्भुत सुठाट ॥१३।
मुनि वंदि इंद थुति नुति करंत। तुम हो जगमें जयवंत संत ॥
फिर तुम विहार करि धर्मवृष्टि। तव जोगनिरोध्यो परम इष्ट ॥१४॥

सम्मेदथकी लिय मुक्ति थान। जय सिद्धशिरोमनि गुननिधान ॥
वृंदावन वंदत वारवार। भवसागरतें मो तार तार ॥ १५ ॥

घत्ता—जय अजित कृपाला, गुनमणिमाला, संजमशाला बोधपती ॥
वर सुजसउजाला, हीरहिमाला, ते अधिकाला स्वच्छ अती ॥१६

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छंद मदावलिप्त कपोल।

जो जन अजित जिनेश जजैं हैं, मनवचकाई।
ताकों होय अनंद ज्ञानसंपति सुखदाई ॥
पुत्र मित्र धनधान्य सुजस त्रिभुवनमहँ छावै।
सकल शत्रु छय जाय अनुक्रमसो शिव पावै ॥१७॥

इत्याशीर्वाद (पुष्पाजलिं क्षिपेत्)

इति श्री अजितजिनपूजा समाप्ता ॥ ३ ॥

श्रीशंभवनाथ जिनपूजा ।

छन्द–मदावलिप्त कपोल

जय शंभव जिनचंद सदा हरिगनचकोरनुत ।
जयसेना जसु मातु जैति राजा जितारसुत ॥
तजि ग्रीवक लिये जन्मनगर सावत्री आई ।
सो भवभंजनहेत भगतपर होहु सहाई ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर । संवौपट् ।
ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीशम्भवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वपट् ।

अष्टक

छंद चौबोला

मुनिमनसम उज्ज्वल जल लेकर, कनक कटोरी मैं धारा ।
जनम जरा मृतु नाश करनकों, तुमपदतर डारों धारा ॥

संभव जिनके चरन चरचतें, सब आकुलता मिट जावै ।
निजनिधि ज्ञान-दरश सुख-वीरज, निराबाध भविजन पावै ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा ।

तपतदाह को कंदन चंदन, मलयागिरिको घसि लायो ।
जगवंधन – भौफंदन–खन्दन , समरथ लखि शरणै आयो ॥सं.॥२॥
ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

देवजीर सुखदास कमल–वासित सित सुन्दर अनियारे ।
पुंज धरों इन चरणन आगें, लहों अखयपदको प्यारे ॥सं.॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

कमल केतकी बेल चमेली, चंपा जूही सुमन वरा ।
तासों पूजत श्रीपति तुमपद, मदनबान विध्वंसकरा ॥सं.॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

घेवर बावर मोदन मोदक, खाजा ताजा सरस बना ।
तासों पद श्रीपति को पूजत, छुधारोग ततकाल हना ॥सं.॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

घटपट परकाशक भ्रमतमनाशक, तुमढिग ऐसो दीप धरों ।
केवलजोत उद्योत होहु मोहि, यही सदा अरदास करों ॥सं. ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अगर तगर कृष्णागर श्री-खंडादिक चूर हुताशनमें ।
खेवत हौं तुम चरनजलजढिग, कर्म छार जरि हैं छिनमें ॥सं.॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल लौंग बदाम छुहारा, एला पिस्ता दाख रमैं ।
ले फल प्राशुक पूजौं तुम पद, देहु अखय पद नाथ हमैं ॥सं.॥८॥
ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप फल अर्घ किया।
तुमको अरपौं भावभगतिधर, जै जै जै शिवरमनि पिया ॥सं० ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

[पंचकल्याणक अर्घ] [छन्द हमी मात्रा १६]

मातागर्भविषैं जिन आय। फागुनसित आठैं सुखदाय॥
सेयो सुरतिय छप्पन वृंद। नानाविध मैं जजौं जिनंद ॥१॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०।

कार्तिक सित पूनम तिथि जान। तीनज्ञानजुत जनम प्रमान॥
धरि गिरिराज जजैं सुरराज। तिन्हें जजौं मैं निजहित काज ॥२॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लापूर्णिमायां जन्ममंगलमंडिताय श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०।

मंगसिरसित पून्यू तप धार। सकल संग तजि जिन अनगार॥
ध्यानादिक वल जीते कर्म। चर्चौं चरण देहु शिवशर्म ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षपूर्णिमायां तपोमंगलमंडिताय श्रीसम्भवनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०।

कातिक कलि तिथि चौथ महान । घाति घात लिय केवलज्ञान ॥
समवसरन महँ तिष्ठे देव । तुरिय चिह्न चर्चों वसुभेव ॥४॥
ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाचतुर्थीदिने ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।
चैत शुकल तिथि षष्ठी चोख । गिरसमेदतैं लीनों मोख ॥
चारशतक धनु अवगाहना । जजों तासु पद थुतिकर घना ॥५॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाषष्ठीदिने मोक्षमंगलमंडिताय श्रीसम्भवनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

अथ जयमाला ।

दोहाः—श्रीसंभवके गुन अगम, कहि न सकत सुरराज ।
मैं वशभक्ति सुधीठ ह्वै, विनवों निजहितकाज ॥१॥
छन्द मोतियदामः-जिनेश महेश गुनेश गरिष्ट । सुरासुरसेवित इष्ट वरिष्ट
धरे वृषचक्र करे अघ चूर । अतत्त्वक्षपातममर्दनसूर ॥२॥
सुतत्त्वप्रकाशन शासन शुद्ध । विवेक विराग बढ़ावन बुद्ध ॥
दया-तरु-तर्पन मेघ महान । कुनैगिरिगंजन वज्र समान ॥३॥

सुगर्भ रु जन्महोत्सवमांहि । जगज्जन आनंदकंद लहाहिं ॥
सुपूरब साठहि लक्ष जु आय । कुमार चतुर्थम अंश रमाय ॥४॥
चवालिस लाख सुपूरव एव । निकंटक राज कियो जिनदेव ॥
तजे कछुकारन पाय सु राज । धरे व्रत संजम आतमकाज ॥५॥
सुरेंद्र नरेंद्र दियो पयदान । धरे बनमें निज आतम ध्यान ॥
कियो चवघातियकर्म विनाश । लयो तब केवलज्ञान प्रकाश ॥६॥
भई समवसृत ठाठ अपार । खिरे धुनि झेलहिं श्रीगणधार ॥
भनै षटद्रव्यतने विसतार । चहूँ अनुयोग अनेक प्रकार ॥७॥
कहे पुनि त्रेपन भाव विशेष । उभै विधि हैं उपशम्य जु भेष ॥
सुसम्यक् चारित भेद स्वरूप । अबैं इमि क्षायक नौ सु अनूप ॥८॥
दृगौं बुधि सम्यक् चारितदान । सु लाभ रु भोगुपभोग प्रमान ॥
सु बीरज संजुत ए नव जान । अठार क्षयोपशमं इमि मान ॥९॥

मति श्रुत अवधि उभै विधि जान । मनःपर्यय चखु और प्रमान ॥
अचक्खु तथावधि दान-रु लाभ । सुभोगुपभोग रु बीरजसाभ ।१०।
व्रताव्रत संजम और सुधार । धरे गुन सम्यक् चारितसार ॥
भये वसु एक समापत येह । इकीस उदीक सुनो अब जेह ॥११
चहुँ गति चारि कपाय तिवेद । छलेश्यय और अज्ञानविभेद ॥
असंजमभाव लखो इसमाहिं । असिद्धित और अतत्त्व कहाहिं ॥१२
भये इकवीस सुनो अब और । विभेद त्रयं परिणामिक ठौर ॥
सुजीवित भव्यत और अभव्व । तरेपन एम भने जिन सव्व ॥१३॥
तिन्होंमहँ केतक त्यागनजोग । कितेक गहेतैं मिटै भवरोग ।
कह्यो इन आदि लह्यो फिर मोख । अनंतगुनातममंडित चोख ॥१४॥
जजों तुमपाय जपों गुनसार । प्रभू हमको भव सागर तार ॥
गही शरणागत दीनदयाल । विलंब करो मति हे गुनपाल ॥१५॥

घत्ताः—जै जै भवभंजन जनमनरंजन, दयाधुरंधर कुमतिहरा ॥
'वृन्दावन' वंदित मनआनंदित, दीजे आतमज्ञानवरा ॥१६॥
ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्द अडिल्लः—जो बांचै यह पाठ सरस सम्भवतनो ।
सो पावै धनधान्य सरस संपति घनो ॥
सकल पाप क्षय जात सुजश जगमें बढ़ै ।
पूजत सुरपद होय अनुक्रम शिव चढ़ै ॥ १७ ॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

इति श्री सम्भवनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥

श्रीअभिनन्दननाथ जिनपूजा ।

छन्द मदावलिप्तकपोल ।

अभिनन्दन आनन्दकन्द, सिद्धारथ-नन्दन ।
संवरपिता दिनन्द चन्द, जिहिं आवत वन्दन ॥

नगर अजोध्या जनम इन्द्र, नागेंद्र जु ध्यावैं ।
तिन्हें जजनके हेत थापि, हम मंगल गावैं ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

[अष्टक] [छन्द गीता, हरिगीता, तथा रूपमाला ।]

पदमद्रहगत गंग चंग, अभंग, धार सुधार है ।
कनकमणिगनजटित झारी, द्वारधार निकार है ॥
कलुषतापनिकंद श्री अभिनंद अनुपमचंद है ।
पदकंद वृंद जजे प्रभू, भवदंदफंदनिकंद है ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा ।

शीतचन्दन कदलिनन्दन, सुजलसंघ घसायकैं ।
है सुगंध दशों दिशामें, भ्रमैं मधुकर आयकैं ॥क०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

हीरहिमशशिफेनमुक्ता, सरिस तन्दुल सेत हैं ।
तासको ढिग पुंज धारौं, अखय पद के हेत हैं ।।क०।। ३ ।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अक्षय पदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

समरसुभटनिघटनकारन, सुमन सुमनसमान हैं ।
सुरभितैं जापैं करै, झंकार मधुकर आन हैं ।।क० ।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

सरस ताजे नव्य गव्य, मनोज्ञ चित हर लेयजी ।
क्षुदाछेदन छिमाछितिपति, के चरन चरचेयजी ।।क०।। ५ ।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अतितमसु मर्दनकिरनवर, बोधभानुविकास है ।
तुम चरनढिग दीपक धरौं, मोहि होहु स्वपरप्रकाश है ।।क०।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

भूर अगर कपूर चूर सुगंध, अगनि जराय है ॥
सब करमकाष्ट सुकाष्टमें मिस, धूमधूम उड़ाय है ॥क० ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

आम निंबु सदा फलादिक, पक्व पावन आनजी ।
मोक्षफलके हेत पूजौं, जोरिकैं जुगपानजी ॥क० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टद्रव्य संवारि सुन्दर, सुजस गाय रसाल ही ।
नचत रचत जजों चरनजुग, नाय नाय सुभाल ही ॥क०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

[पंचकल्याणक अर्घ] [छन्द हरिपद]

शुकलछट वैशाखविषै तजि, आये श्रीजिनदेव ।
सिद्धारथमाता के उरमें, करै शची शुचि सेव ॥
रतनवृष्टि आदिक वर मंगल, होत अनेकप्रकार ।

ऐसे गुननिधिकौं मैं पूजौं, ध्यावौं वारंबार ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं वैसाखशुक्लाषष्ठीदिने गर्भमंगलमंडिताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

माघशुकलतिथि द्वादशिके दिन, तीनलोकहितकार ।
अभिनंदन आनंदकंद तुम, लीन्हो जगअवतार ॥
एक महूरत नरकमाँहि हू, पायो सब जिय चैन ।
कनकवरन कपिचिन्हधरनपद, जजौं तुमैं दिनरैन ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व० ।

साढ़े छत्तिसलाख सुपूरब, राजभोग वर भोग ।
कछु कारन लखि माघशुकल, द्वादशिको धारयो जोग ॥
षष्टम नेम समापति करि लिय, इन्द्रदत्त घर छीर ।
जय धुनि पुष्प रतन गंधोदक, वृष्टि सुगंध समीर ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां दीक्षाकल्याणप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

पौष शुकल चौदशिको घाते, घातिकरमदुखदाय ।
उपजायो वरबोध जासको, केवल नाम कहाय ॥
समवसरन लहि बोधिधरम कहि, भव्यजीव सुखकंद ।
मोकों भवसागरतैं तारो, जय जय जय अभिनंद ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लाचतुर्दश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

जोगनिरोध अघातिघाति लहि, गिरिसमेदतैं मोख ।
माससकल सुखराश कहे, बैशाखशुकल छठ चोख ॥
चतुरनिकाय आय तित कीनो, भगतभाव उमगाय ।
हम पूजैं इत अरघ लेय जिमि, विघनसघन मिट जाय ॥५॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठीदिने मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीअभिनन्दननाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

जयमाला ।

दोहाः—तुंग सु तन धनु तीनसौ, औ पचास सुखधाम ।
कनकवरन अवलोकिके, पुनि पुनि करूं प्रणाम ॥१॥

छन्द लक्ष्मीधरा।

सच्चिदानंद सद्ज्ञान सद्दर्शनी। सत्स्वरूपा लई सत्सुधासर्सनी।
सर्व आनंदकंदा महादेवता। जासु पादाब्ज सेवैं सवैं देवता ॥२॥
गर्भ औ जन्मनिःकर्मकल्यानमें। सत्वको शर्म पूरै सवै थानमें ॥
वंशइच्वाकु में आपु ऐसे भये। ज्यों निशाशर्द में इन्दु स्वच्छै ठये।

गीतिका छन्द—होत वैराग्यलौकांतगुर वोधियो।
फेरि शिविकासु चढि गहन निजसोधियो ॥
घाति चौघातिया ज्ञान केवल भयो।
समवसरनादि धनदेव तब निरमयो ॥ ४ ॥
एक है इन्द्रनीली शिला रत्नकी।
गोल साढेदशें जोजने जत्नकी ॥
च्यारदिशपेड़िका वीस हज्जार है।

रत्नके चूरका कोट निरधार है ॥ ५ ॥
कोट चहु ओर चहुँद्वार तोरन खँचे ।
तासु आगैं चहूँ मानथंभा रचे ॥
मान मानी तजै जासु ढिग जायकैं ।
नम्रता धार सेवैं तुम्हैं आयकैं ॥ ६ ॥

छन्द लक्ष्मीधरा ।

बिंब सिंहासनोंपै जहाँ सोहहीं । इन्द्रनागेन्द्र केते मनैं मोहहीं ।
वापिका वारिसों यत्र सोहै भरी । जासमें न्हात ही पाप जावै टरी ।७
तास आगैं भरी खाति का वारिसों । हंस सूआदि पंखी रमैं प्यारसौं ॥
पुष्पकी वाटिका बागवृच्छैं जहाँ । फूल औ श्रीफलें सर्वही है तहाँ ।८
कोट सौवर्ण का तासु आगे खड़ा । चार दर्वाज चौओर रत्नों जड़ा ।
च्यार उद्यान चारोंदिशा मैं गना । है धुजापंक्ति औ नाटशाला बना ।९
तासु आगैं त्रितीकोट रूपामयी । तूप नौ जासु चारों दिशामें ठयी ॥

धाम सिद्धांतधारीनके हैं जहाँ। औ सभाभूमि है भव्य तिष्ठै तहां।१०
तास आगैं रची गंधकूटी महा। तीन है कट्टिनी सारशोभा लहा॥
एकपैं तो निधैं ही धरी ख्यात हैं। भव्यप्रानी तहाँ लौं सबैं जात हैं।११
दूसरी पीठपै चक्रधारी गमैं। तीसरे प्रातिहार्यें लसै भागमैं॥
तासपैं वेदिका चार थंभानकी। है बनी सर्वकल्यानके खानकी॥१२
तासपैं है सुसिंहासनं भासनं। जासपै पद्म प्राफुल्ल है आसनं॥
तासुपैं अंतरीच्छं विराजै सही। तीनछत्रै फिरैं शीसरत्नै यही॥१३
वृच्छ शोकापहारी अशोकं लसै। दुन्दुभीनाद औ पुष्प खंते खसैं॥
देहकी ज्योतिसो मंडलाकार है। सात भौ भव्य तामैं लखै सार है॥१४
दिब्यवानी खिरै सर्वशंका हरै। श्रीगनाधीश झेलैं सुशक्ती धरै॥
धर्मचक्री तुही कर्मवक्री हने। सर्वशक्री नमैं मोदधारैं घने॥१५॥
भव्यको बोधि सम्मेदतैं शिवगये। तत्र इन्द्रादि पूजे सुभक्तीमये॥

हे कृपासिंधु मोपैं कृपा धारिये । घोर संसारसों शीघ्र मो तारिये॥१६

घत्ता—जै जै अभिनन्दा आनन्द कन्दा, भवसमुद्रवरपोत इवा ।

भ्रमतमशतखंडा, भानुप्रचंडा, तारि तारि जगरैनदिवा ॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

[कवित्त]

श्री अभिनन्दन पापनिकन्दन, तिनपद जो भवि जजैं सुधार ।

ताके पुन्यभानु वर उग्गै, दुरिततिमिर फाटै दुखकार ॥

पुत्र मित्र धनधान्य कमल यह, विकसै सुखद जगतहित प्यार ।

कछुक कालमें सो शिव पावै, पढ़ै सुनैं जिन जजैं निहार ॥१८॥

इत्याशीर्वादः । (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री सुमतिनाथ पूजा ।

कवित्त रूपक मात्रा ३१ ।

संजमरतन विभूषन भूषित, दूषनदूषन श्रीजिनचंद ।

सुमतिरमारंजन भवभंजन, संजयन्त तजि मेरुनरिंद ॥
मातुमङ्गला सकलमङ्गला, नगर विनीता जये अमन्द ।
सो प्रभुदयासुधारसगर्भित आय तिष्ठ इत हरि दुखदन्द ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमति जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर ! संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीसुमति जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीसुमति जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक—छन्द कवित्त तथा कुसुमलता

पञ्चमउदधितनों सम उज्ज्वल, जल लीनों वरगंध मिलाय ।
कनककटोरीमांहिं धारिकरि, धार देहु शुचि मनवचकाय ॥
हरिहरवन्दित पापनिकन्दित, सुमतिनाथ त्रिभुवनके राय ।
तुमपदपद्म सद्मशिवदायक, जजत मुदितमन उदित सुभाय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलयागर घनसार घसौं वर, केशर अर करपूर मिलाय ।

भवतपहरन चरन पर वारों, जनमजरामृततताप पलाय ॥ हरि०॥२॥
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।
शशिसमउज्ज्वल सहितगंधतल, दोनों अनी शुद्ध सुखदास ।
सो लै अखयसंपदाकारन, पुंज धरों तुमचरननपास ॥ हरि०॥३॥
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।
कमलकेतकी वेल चमेली, करना अरु गुलाब महकाय ।
सो ले समरशूलक्षयकारण, जजों चरन अति प्रीति लगाय ॥हरि०॥४॥
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।
नव्य गव्य पकवान वनाऊं, सुरस देखि दृगमन ललचाय ।
सो ले क्षुधारोगक्षयकारण, धरौं चरणढिग मनहरषाय ॥ हरि०॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
रतनजटित अथवा घृतपूरित, वा कपूरमय जोति जगाय ।
दीप धरों तुम चरननआगें, जातैं केवलज्ञान लहाय ॥ हरि०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अगर तगर कृष्णागर चंदन, चूरि अगनिमें देत जराय ।
अष्टकरम ये दुष्ट जरतु हैं, धूम धूम यह तासु उड़ाय ॥हरि०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल मातुलिंग वर दाड़िम, आम निंबु फल प्रासुक लाय ।
मोक्षमहाफल चाखन कारन, पूजत हों तुमरे जुग पाय ॥हरि॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप फल सकल मिलाय ।
नाचि नाचि शिरनाय समरचों, जय जय जय जय जय जिनराय ॥ह.९

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

[पंचकल्याणक अर्घ] [रूप चौपाई]

संजयंत तजि गरभ पधारे । सावणसेतदुतिय सुखकारे ॥
रहे अलिप्त मुकुर जिमि छाया । जजौं चरण जय जय जिनराया ।१॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाद्वितीयादिने गर्भमंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

चैत शुकल ग्यारस कहं जानों । जनमें सुमति सहित त्रयज्ञानों ॥
मानो धरयो धरम अवतारा । जजों चरणजुग अष्टप्रकारा ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व० ।

चेतशुकलग्यारस तिथि भाखा । तादिन तप धरि निजरस चाखा ।
पारण पद्मसद्मपय कीनों । जजत चरण हम समता भीनों ॥३॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां तपमंगलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व० ।

शुकलचैत एकादशि हाने । घाति सकल जे जुगपति जाने ॥
समवसरनमँह कहि वृषसारं । जजहुँ अनंतचतुष्टयधारं ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां ज्ञानसाम्राज्यप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व० ।

चेतशुकलग्यारस निरवानं । गिरिसमेदतें त्रिभुवनमानं ।
गुन अनंत निज निरमलधारी । जजौं देव सुधि लेहु हमारी ॥५॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्व० ।

जयमाला ।

दोहा:—सुमति तीनसौ छत्तिसो, सुमतिभेद दरशाय ।
सुमति देहु विनती करों, सुमति[1] विलम्ब कराय ॥१॥
दयाबेलितरु सुगुननिधी, भविकमोद-गण चन्द ॥
सुमतिसतीपति सुमतिकों, ध्यावों धरि आनन्द ॥२॥
पंच परावरतन हरन, पञ्चसुमति सित दैन ॥
पञ्चलब्धि दातार के, गुन गाऊं दिनरैन ॥३॥

छंद भुजगप्रयात ।

पिता मेघराजा सबै सिद्धकाजा । जपै नाम जाको सबै दुःख भाजा ।
महासूर इक्ष्वाकुवंशी विराजै । गुणग्राम जाको सबै ठौर छाजै ॥४॥
तिन्होंके महापुण्यसों आप जाये । तिहूं लोक में जीव आनंद पाये ॥
सुनासीर[2] ताही घरी[3] मेरु धायो । क्रिया जन्मकी सर्व कीनी यथायो ॥
बहुरि तातकों सोंपि संगीत कीनों । नमें हाथ जोरे भली भक्तिभीनों ॥

१ मत, नहीं । २ इन्द्र । ३ समय ।

चिताई दशौलाख ही पूर्व वालें। प्रजा लाख उन्तीस ही पूर्व पालै ॥६॥
कछू हेतुतें भावना बार[2] भाये। तहां ब्रह्मलोकांतके देव आये ॥
गये बोधि ताही समै इन्द्र आयो। धरे पालकीमें सु उद्यान ल्यायो ॥७॥
नमें सिद्धको केशलोंचे सबै ही। धरयो ध्यान शुद्धं जु घाती हने ही ॥
लह्यो केवलं औ समोसर्न साजं। गणाधीश जू एकसौ सोल राजं ॥८॥
खिरें शब्द तामैं छहों द्रव्य धारे। गुनौपर्जउत्पादव्ययध्रौव्य सारे ॥
तथा कर्म आठों तनी थित्ति गाजं। मिलै जासुकेनाशतें मोच्छराजं ॥
धरें मोहिनी सत्तरं कोड़कोड़ी। सरित्पत्प्रमाणं थितिं दीर्घ जोड़ी ॥
अवज्ञानदृग्वेदिनी अंतरायं। धरैं तीसकोड़ाकोड़ि सिंधुकायं ॥१०॥
तथा नामगोतं कुड़ाकोड़ि वीसं। समुद्रप्रमाणं धरैं सत्ताईसं ॥
सुतैतीसअब्धिं धरें आयु अब्धिं। कही सर्वकर्मोंतनी वृद्धलब्धिं ॥११॥

१ आत्मज्ञान। २ बारह।

जघन्यप्रकारैं धरैं भेद ये ही । मुहूर्त्तं वसू नामगोतं गने ही ।
तथा ज्ञान दृग्मोह प्रत्यूह आयं । सुअन्तर्मुहूर्त्तं धरैं थित्त गायं ॥१२॥
तथा वेदिनी बारहैं ही मुहूर्त्तं । धरैं थित्त ऐसैं भन्यो न्यायजुत्तं ।
इन्हैं आदि तत्त्वार्थ भाख्यो अशेषा । लह्यो फेरि निर्वानमाहीं प्रवेशा ।१३
अनन्तं महन्तं सुसन्तं सुतन्तं । अमन्दं अफन्दं अनन्दं अभन्तं ।
अलक्षं विलक्षं सुलक्षं सुदक्षं । अनक्षं अवक्षं अभक्षं अतक्षं ॥१४॥
अवर्णं अघर्णं अमर्णं अकर्णं । अभर्णं अतर्णं अशर्णं सुशर्णं ।
अनेकं सदेकं चिदेकं विवेकं । अखण्डं सुमंड प्रचण्डं तदेकं ॥१५॥
सुपर्मं सुधर्मं सुशर्मं अकर्मं । अनन्तं गुनाराम जैवन्त वर्मं ।
नमैं दास 'वृन्दावनं, शर्न आई । सबै दुःखतैं मोहि लीजै छुड़ाई ॥१६॥
घत्ता:—तुव सुगुन अनन्ता, ध्यावत सन्ता, भ्रमतमभंजनमार्तंडा ।
सतमतकरचंडा भविकजमंडा, कुमतिकुबलइन-गन हंडा ।१।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्द गेड़कः—सुमतिचरण जो जजैं, भविक जन मनवचकाई ।
ताखु सकलदुखदन्द फंद ततछिन छय जाई ॥
पुत्रमित्र धन धान्य, शर्म अनुपम सो पावै ।
'वृन्दावन' निर्वाण, लहै जो निहचै ध्यावै ॥ १८ ॥

इत्याशीर्वाद (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

इति श्री सुमतिजिनपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥

श्री पद्मप्रभ जिनपूजा ।

छन्द रोड़क (मदावलिप्तकपोल)।

पद्मरागमनिवरनधरन तनतुंग अढ़ाई ।
शतक दराड अघखराड, सकल सुर सेवत आई ॥
धरनि तात विख्यात सुसीमाजूके नन्दन ।
पदमचरन धरि राग सु थापों इतकरि वन्दन ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक—चाल होलीकी–ताल जत्त ।

पूजों भावसों श्रीपद्मनाथपद सार, पूजों भावसों ॥ टेक ॥

गङ्गाजल अति प्रासुक लीनों, सौरभ सकल मिलाय ॥

मनवचतन त्रयधार देत ही, जनमजरामृत जाय ।

पूजों भावसों, श्रीपद्मनाथपद सार पूजों भावसों ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा ।

मलयागर कपूर चन्दन घसि, केशरसंग मिलाय ।

भवतपहरन चरनपर वारौं, मिथ्याताप मिटाय ॥पूजों०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा ।

तन्दुल उज्ज्वल गन्ध अनीजुत, कनकथाल भर लाय ।

पुञ्ज धरौं तव चरणन आगैं, मोहि अखयपद दाय ॥पूजों०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पारिजात मन्दारकल्पतरु, जनित सुमन शुचि लाय।

समरशूल निरमूलकरनकों, तुम पद-पद्म चढ़ाय ॥पूजों०॥ ४

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर बावर आदि मनोहर, सद्य सजे शुचिभाय।

क्षुधा-रोगनिर्वारन कारन, जजौं हरष उर लाय ॥पूजों०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपकजोति जगाय ललित वर, धूमरहित अभिराम।

तिमिरमोह नाशनके कारन, जजौं चरन गुनधाम ॥पूजों०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागर मलयागर चंदन, चूरि सुगन्ध बनाय।

अग्निमाहिं जारों तुम आगैं, अष्टकरम जरि जाय ॥पूजों०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरस-वरन रसना मनभावन, पावन फल अधिकार ।
तासों पूजों जुगम चरण यह, विघन करमनिरवार ॥ पूजों० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल फल आदिमिलाय गाय गुन भगतिभाव उमगाय ।
जजों तुम्हें शिवतियवर जिनवर, आवागमन मिटाय ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच कल्याणक अर्घ ।] [छन्द द्रुतविलंबित तथा सुन्दरी मात्रा १६ ।

असित माघ सु छट्ठ बखानिये । गरभमङ्गल तादिन मानिये ॥
उरधग्रीवकसों चय राजजी । जजत इन्द्र जजैं हम आजजी ॥२॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाषष्ठीदिने गर्भमंगलमंडिताय श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

सुकलकार्तिकतेरसकों जये । त्रिजगजीव सु आनन्दकों लये ॥
नगर स्वर्गसमान कुसम्बिका । जजतु हैं हरिमंजुत अम्बिका ॥२॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लात्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

सुकलतेरसकार्तिक भावनी । तप धरयो वन षष्ठम पावनी ॥
करत आतमध्यान धुरन्धरो । जजत हैं हम पाप सबैं हरो ॥३॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लात्रयोदश्यां तपोमङ्गलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

सुकल पूनम चेत सुहावनी । परमकेवल सा दिन पावनी ॥
सुरसुरेश नरेश जजे तहां । हम जजैं पदपङ्कजको इहां ॥४॥

ॐ ह्रीं चैत्रपूर्णिमायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

असित फागुन चौथ सुजानियो । सकलकर्म महारिपु हानियो ॥
गिरिसमेदथकी शिवको गये । हम जजैं पद ध्यानविषैं लये ॥५॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्थीदिने, मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

अथ जयमाला ।

घत्ता—जय पद्मजिनेशा, शिवसद्मेशा, पादपद्म जजि पद्मेशा ।
जय भवतमभंजन, मुनिमनकंजन, रंजनको दिवसाधेशा ॥ १ ॥

छन्द रूप चौपाई १६ मात्रा।

जय जय जिन भविजन हितकारी। जय जय जिन भव सागरतारी ॥
जय जय समवशरन धनधारी। जय जय वीतराग हितकारी ॥२
जय तुम सप्त तत्त्वविधि भाख्यौ। जय जय नवपदार्थ लखि आख्यौ ॥
जय षट्द्रव्य पंच जुतकाया। जय सबभेद सहित दरशाया ॥३
जय गुनथान जीव परमानों। जय पहिले अनन्त जिय जानो ॥
जय दूजे सासादन माहीं। तेरहकोड़ि जीवथिति आंही ॥४
जय तीजे मिश्रित गुणथाने। जीव सु बावनकोड़ि प्रमाने ॥
जय चौथे अविरित-गुन जीवा। चारअधिक शतकोड़ि सदीवा ॥५
जय जिय देशवरतमें शेषा। कौड़ि सातसौ हैं थिति वेशा ॥
जय प्रमत्त षटशून्य दोय वसु। पांच तीन नव पांच जीव लसु ॥६
जय जय अपरमत्तगुन कोरं। लच्छ छयानवै सहस बहोरं ॥

निन्यानवे एकशत तीना । एते मुनि तित रहहिं प्रवीना ॥७॥
जय जय अष्टममें दुइ धारा । आठशतक सत्तानों सारा ॥
उपशममें दुइसो निन्यानों । क्षपकमाँहि तसु दूने जानों ॥८॥
जय इतने इतने हितकारी । नवैं दशैं जुगश्रेणी धारी ॥
जय ग्यारैं उपशममगगामी । दोसैं निन्यानौं अघआमी ॥९॥
जय २ खीणमोह गुनथानों । मुनि शतपांचअधिक अट्ठानों ॥
जय जय तेरहमें अरहंता । जुग[२] नभ[०] पन[५] वसु[८] नव[९] वसु[८] तंता
एते राजतु हैं चतुरानन । हम बंदैं पद थुतिकरि आनन ॥
जय अजोग गुनमें जे देवा । पनसौ ठानों करों सुसेवा ॥११॥
तित तिथि अइउऋलृ लघु भाषत । करि थिति फिर शिवआनंद चाखत ।
ए उत्कृष्ट सकल गुणथानी । तथा जघन्य मध्य जे प्रानी ॥१२॥
तीनों लोक सदन के वासी । गुन-परजाय भेद परकाशी ॥

तथा और द्रव्यनके जेते। गुनपरजाय भेद हैं तेते ॥ १३ ॥
तीनों कालतने जु अनंता। सो तुम जानत जुगपत मंता ॥
सोई दिव्यवचनके द्वारे। दे उपदेश भविक उद्धारे ॥ १४ ॥
फेरि अचलथलवासा कीनों। गुन अनंत निजआनन्द भीनों ॥
चरमदेहतें किंचित् ऊनो। नर आकृति तिथि हैं नित गूनो ॥१५॥
जय जय सिद्धदेव हितकारी। वार बार यह अरज हमारी।
मोकौं दुखसागरतें काढ़ो। 'वृन्दावन' जाचतु हैं ठाढ़ो ॥ १६ ॥

घत्ता—जय जय जिनचंदा पद्मानंदा, परमसुमतिपद्माधारी ॥
जय जनहितकारी दया,विचारी, जय जय जिनवर अधिकारी ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द रोड़क—जजत पद्मपदपद्म सद्म ताके सुपद्म अत।
होत वृद्धि सुतमित्र सकल आनंदकंद शत।

लहत स्वर्गपदराज, तहांतें चय इत आई ।
चक्रीको सुख भोगि, अंत शिवराज कराई ॥ ८ ॥

इत्याशीर्वादः । (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

इति श्रीपद्मप्रभजिनपूजा समाप्ता ॥ ६ ॥

श्रीसुपार्श्वनाथ जिनपूजा ।

छंद हरिगीता तथा गीता ।

जय जय जिनिंद गनिंद इन्द, नरिंद गुन चिंतन करैं ।
तन हरीहर मनसम हरत मन, लखत उर आनंद भरैं ॥
नृप सुपरतिष्ठ वरिष्ठ इष्ट, महिष्ट शिष्ट पृथी प्रिया ।
तिन-नंदके पद वंद वृन्द, अमन्द थापतु जुतक्रिया ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

चाल द्यानतरायजीकृत सोलहकारणभाषाअष्टककी ।

तुम पद पूजौं मनवचकाय, देव सुपारस शिवपुरराय ।
दयानिधि हो, जय जगवन्धु दयानिधि हो ॥
उज्ज्वल जल शुचि गंध मिलाय, कंचनझारी भरकर लाय ।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो ॥ तुम० देव० ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलयागरचन्दन घसि सार, लीनों भवतपभञ्जनहार ।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो ॥ तुम० देव० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

देवजीर सुखदास अखण्ड, उज्ज्वल जलक्षालित सित मंड ॥
दयानिधि हो, जयजगबन्धु दयानिधि हो ॥ तुम० देव० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रासुक सुमन सुगन्धित सार, गुञ्जत अलि मकरध्वजहार ।

दयानिधि हो, जयजगबन्धु दयानिधि हो ॥ तुम० देव० ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षुधा हरन नेवज वर लाय । हरो वेदनी तुम्हैं चढ़ाय ॥

दयानिधि हो, जयजगबन्धु दयानिधि हो ॥ तुम० देव० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्वलित दीप भरिकर नवनीत । तुमढिग धारतु हों जगमीत ॥

दयानिधि हो, जयजगवंधु दयानिधि हो ॥ तुम० देव० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दशविधि गंध हुताशनमांहिं । खेवत क्रूर करम जरि जाहिं ॥

दयानिधि हो, जयजगबन्धु दयानिधि हो ॥ तुम० देव० ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल केला आदि अनूप । ले तुम अग्र धरों शिवभूप ॥

दयानिधि हो, जयजगबन्धु दयानिधि हो ॥ तुम० देव० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

आठों दरव साजि गुनगाय । नाचत राचत भगति बढ़ाय ॥
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो ॥ तुम० देव० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचकल्याणक अर्घ ।] [छन्द द्रुतविलंबित तथा सुन्दरी (वर्ण १२)

सुकलभादवछट्ट सुजानिये । गरभमंगल तादिन मानिये ॥
करत सेव शची रचि मातकी । अरध लेय जजों वसु भांतिकी ॥१॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाषष्ठिदिने गर्भमंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

सुकलजेठदुवादशि जन्मये । सकल जीव सु आनन्द तन्मये ॥
त्रिदशराज जजें गिरिराजजी । हम जजैं पद मंगल साजजी ॥२॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

जनमके तिथि श्रीधरनें धरी । तप समस्त प्रमादनकों हरी ॥
नृपमहेन्द्र दियो पय भावसों । हम जजैं इत श्रीपद चावसों ॥३॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां निःक्रमणकल्याणप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

असरफागुणछट्ट सुहावनों । परमकेवलज्ञान लहावनों ॥
समवसर्नविषैं वृष भाखियो । हम जजैं पद आनन्द चाखियो ॥४॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाषष्ठिदिने ज्ञानसाम्राज्यपदप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

असितफागुणसांतय पावनों । सकलकर्म कियो छय भावनों ।
गिरि समेदथकी शिव जातु हैं । जजत ही सब विघ्न विलातु हैं ॥५॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तमीदिने मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

अथ जयमाला ।

दोहा—तुङ्ग अङ्ग धनु दोयसो, शोभा सागरचन्द ।
मिथ्यातपहर सुगुनकर, जय सुपार्श्व सुखकन्द ॥१॥

छन्द कामिनीमोहन ।

जैति जिनराज शिवराज हितहेत हो ।
परमवैरागआनन्द भरि देत हो ॥

गर्भके पूर्व षटमास धन देवने ।
नगर निरमापि बाणारसी सेवने ॥ २ ॥
गगनसौं रतनकी धार बहु वर्षहीं ।
कोड़ि त्रयअर्द्ध त्रयवार सब हर्षहीं ॥
तातके सदन गुनवदन रचना रची ।
मातुकी सर्वविधि करत सेवा शची ॥ ३ ॥
भयो जब जनम तब इंद्रआसन चल्यो ।
होय चकित तुरित अवधितैं लखि भल्यो ॥
सप्त पग जाय शिर नाय वंदन करी ।
चलन उमग्यो तबै मानि धनि धनि घरी ॥४॥
सात विधि सैन गज वृषभ रथ बाज लै ।
गंधरव निरतकारी सबै साज लै ।

गलितमदगंड ऐरावती साजियो ।
लक्षजोजन सु तन वदन सत राजियो ॥५॥
वदन वसुदन्त प्रतिदंत सरवर भरे ।
तासु मधि शतकपनवीस कमलिनि खरे ॥
कमलनी मध्य पनवीस फूले कमल ।
कमलप्रति कमलमहँ एकसौआठ दल ॥६॥
सर्वदल कोड़शतवीस परमान जू ।
तासु पर अपछरा नचहिं जुतमान जू ॥
तततता तततता वितता ताथेई ।
धृगतता धृगतता धृगततामैं लई ॥७॥
धरत पग सनन नन सनन नन गगनमें ॥
नूपुरें झनन नन झनन नन पगनमें ॥८॥

नचत इत्यादि कइ भाँतिसौं मगन में ।
केइ तित बजट बाजे मधुर पगन में ॥ ८ ॥
केइ द्रम द्रम सुद्रम द्रम मृदंगनि धुनैं ।
केइ झल्लरि झननन झननन झंझनै ॥
केइ संसागृदि संसागृदि सारंगि सुर ।
केइ बीनापटह वंशि वाजैं मधुर ॥ ९ ॥
केई तननन तननन तानै पुरैं ।
शुद्ध उच्चारि सुर केइ पाठैं फुरैं ॥
केइ झुकि झुकि फिरैं चक्रसी भामिनी ।
धृगतताँ धृगतताँ परम शोभा बनी ॥१०॥
केइ छिन निकट छिन दूर छिन थूल लघु ।
धरत वैक्रियकपरभावसों तन सुभगु ॥

केइ करताल करताल करमें धुने ।
तत वितत घन सुखरि जात बाजै सुने ॥११॥
इन्हे आदिक सकल साज संग धारिकैं ।
आय पुर तीन फेरी करी प्यार कैं ॥
सचिय तब जाय परसूतथल मोदमें ।
मातु करि नींद लीनों तुम्हें गोदमें ॥ १२ ॥
आना गिरवाननाथहिं दियो हाथमें ।
छत्र अर चमर वर हरि करत माथमें ॥
चढ़े गजराज जिनराज गुन जापियो ।
जाय गिरिराजपांडुकशिला थापियो ॥ १३ ॥
लेय पञ्चमउदधिउदक करकर सुरनि ।
सुरन कलशनि भरे सहित चर्चित पुरनि ॥

सहस अरु आठ शिर कलश ढारे जबैं ।
अघघ घघ घघघ घघ भभभ भभ भौं तबैं ॥१४॥
धधध धध धधध धध धुनि मधुर होत है ।
भव्यजनहँसके हरष उद्योत है ॥
भयें इमि न्हौन तव सकल गुनरंगमें ।
पोंछि शृङ्गार कीनों शची अंग में ॥१५॥
आनि पितुसदन शिशु सौंपि हरि थल गयो ।
बालवय तरुन लहि राजसुखभोगियो ॥
भोग तज जोग गहि चार अरिकों हने ।
धारि केवल परमधरम द्वयविधि भने ॥१६॥
नाशि अरि शेष शिवथानवासी भये ।
ज्ञान दृग शर्म बीरज अनन्ते लये ॥

सो जगतराज यह अरज उर धारियो ।
धरमके नन्दको भवउदधि तारियो ॥१७॥

घत्ता—जय करुनाधारी, शिवहितकारी, तारनतरन जिहाजा हो ।
सेवक नित बंदै, मनआनन्दै, भवभयमेटनकाजा हो ॥१८॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा—श्रीसुपार्श्वपदजुगल जो, जजै पढ़ै यह पाठ ।
अनुमोदै सो चतुर नर, पावै आनन्द ठाठ ॥१९॥

इत्याशीर्वाद. (पुष्पाजलिं क्षिपेत्)

इति श्री सुपार्श्वनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥

श्री चन्द्रप्रभ जिनपूजा ।

छप्पय:—चारुचरन आचरन चरन चितहरन चिह्नचर ।
चंदचंदतनचरित, चंदथल चहत चतुर नर ॥
चतुक चंड चकचूरि, चारि चिद्चक्र गुनाकर ।

चंचल चलितसुरेश , चूलनुत चक्र धनुरहर ॥
चरअचरहितू तारनतरन , सुनत चहकि चिरनंद शुचि ।
जिनचंदचरन चरच्यो चहत , चितचकोर नचि रच्चि रुचि ॥१॥
दोहा—धनुष डेढसौ तुङ्ग तन, महासेन नृपनंद ।
मातुलछमनाउर जये, थापों चंदजिनन्द ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर, संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

चाल —द्यानतरायकृत नंदीश्वरअष्टककी, अष्टपदी तथा होली आदि में ।

गंगाहृदनिरमलनीर, हाटकभृङ्गभरा ।
तुम चरण जजों वरवीर, मेटो जनमजरा ॥
श्रीचन्दनाथदुति चंद, चरनन चन्द लगै ।

मनवचतन जजत अमंद आतम जोति जगै ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीखण्डकपूर सुचंग , केशररंग भरी ।

घसि प्रासुकजलके संग , भवआताप हरी॥ श्री० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तंदुल सित सोमसमान,, सम ले अनियारे।

दिय पुञ्ज मनोहर आन, तुमपदतर प्यारे ॥ श्री० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षय पदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरद्रुमके सुमन सुरंग, गंधित अलि आवै।

तासों पद पूजत चंग, कामविथा जावै ॥ श्री० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नेवज नानापरकार , इन्द्रियबलकारी ।

सो लै पद पूजों सार, आकुलताहारी ॥ श्री० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तमभंजन दीप संवार, तुमढिग धारतु हौं ।
मम तिमिरमोह निरवार, यह गुण धारतु हौं ॥श्री० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दशगंधहुतासनमाहिं, हे प्रभु खेवतु हौं ।
मम करम दुष्ट जरिजांहि, यातें सेवतु हौं ॥ श्री० ॥७॥

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अति उत्तमफल सु मंगाय, तुम गुणगावतु हौं ।
पूजौं तन मन हरषाय, विघन नशावतु हौं ॥ श्री० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों ।
पूजों अष्टमजिन मीत, अष्टम अवनि गमों ॥ श्री० ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

[पंच कल्याणक अर्घ] [छन्द द्रुतविलंबित तथा सुन्दरी मात्रा १६]

कलिपंचमचैत सुहात अली । गरभागममंगल मोद भली ॥
हरि हर्षित पूजत मातु पिता । हम ध्यावत पावत शर्मसिता ॥१॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णापञ्चम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

कलि पोषइकादशि जन्म लयो । तब लोकविषै सुखथोक भयो ॥
सुर ईश जजें गिरशीश तबैं । हम पूजत हैं नुतशीश अबैं ॥२॥
ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

तप दुद्धर श्रीधर आप धरा । कलिपोष इग्यारसि पर्व वरा ॥
निजध्यानविषैं लवलीन भये । धनि सो दिन पूजत विघ्न गये ॥३॥
ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपः मंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्व० ।

वर केवलभानु उद्योत कियो । तिहुं लोकतणों भ्रम मेट दियो ॥
कलि फाल्गुणसप्तमि इन्द्रजजे । हम पूजहिं सर्व कलंक भजे ॥४॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्व० ।

सित फाल्गुण सप्तमि मुक्ति गये। गुणवन्त अनन्त अबाध भये ॥
हरि आय जजे तित मोदधरे। हम पूजत ही सब पाप हरें ॥५॥
ॐ ह्रीं फाल्गुणशुक्लासप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

अथ जयमाला।

हे मृगांकअंकितचरण, तुम गुण अगम अपार ।
गणधरसे नहिं पार लहिं, तौ को वरणत सार ॥१॥
पै तुम भगति हिये मम, प्रेरै अति उमगाय ।
तातैं गाऊं सुगुण तुम, तुम ही होउ सहाय ॥२॥
जय चन्द्र जिनेन्द्र दयानिधान। भवकानन-हानन दवप्रमान ॥
जय गरभजनममंगल दिनन्द। भवि जीवविकाशन शर्मकंद ॥३॥
दशलक्ष पूर्वकी आयु पाय। मनवांछित सुख भोगे जिनाय।
लहि कारण ह्वै जगतैं उदास। चिंत्यो अनुप्रेक्षा सुखनिवास ॥४॥

तित लौकांतिक बोध्यो नियोग । हरि शिविका सजि धरियो अभोग ॥
तापैं तुम चढ़ि जिनचन्दराय । ताछिनकी शोभा को कहाय ॥५॥
जिन अंग सेत सित चमर ढार । सित छत्र शीश गल गुलक हार ॥
सित रतनजड़ित भूषण विचित्र । सित चन्द्रचरण चरचैं पवित्र ॥६॥
सित तनद्यु ति नाकाधीश आप । सित शिविका कांधे धरि सुचाप ॥
सित सुजस सुरेश नरेश सर्व । सित जितमैं चिन्तत जात पर्व ॥७॥
सित चंदनगरतैं निकसि नाथ । सित बनमैं पहुँचे सकलसाथ ॥
सित शिलाशिरोमणि स्वच्छछाँह । सित तप तित धारयो तुम जिनाह ॥
सित पयको पारण परमसार । सित चंद्रदत्त दीनों उदार ॥
सित करमैं सो पय धार देत । मानों बाधत भवसिन्धुसेत ॥८॥
मानों सुपुण्यधारा प्रतच्छ । तित अचरज पनसुर किय ततच्छ ॥
फिर जाय गहन सित तपकरंत । सित केवलज्योति जग्यो अनन्त ॥

लहि समवसरणरचना महान । जाके देखत सब पाप हान ॥
जहँ तरु अशोक शोभै उतंग । सब शोक तनों चूरै प्रसंग ॥ ११ ॥
सुर सुमनवृष्टि नभतैं सुहात । मनु मन्मथ तज हथियार जात ॥
बानी जिनमुखसौं खिरै सार । मनु तत्त्व प्रकाशन मुकुरधार ॥१२॥
जहँ चौसठ चमर अमर ढुरंत । मनु सुजश मेघझरि लगि पतन्त ॥
सिंहासन है जहँ कमलजुक्त । मनु शिवसरवरको कमलशुक्त ॥१३
दुँदुभि जित बाजत मधुर सार । मनु करमजीतको है नगार ॥
सिर छत्र फिरै त्रय श्वेतवर्ण । मनु रतन तीन त्रयताप हर्ण ॥१४॥
तन प्रभातनों मण्डल सुहात । भवि देखत निजभव सात मात ॥
मनु दर्पणद्युति यह जगमगाय । भविजन भवमुख देखत सुआय ॥१५
इत्यादि विभूति अनेक जान । बाहिज दीखत महिमा महान ॥
ताको वरणत नहिं लहत पार । तो अन्तरंगको कहै सार ॥ १६ ॥

अनअन्त गुणनिजुत करि विहार । धरमोपदेश दे भव्य तार ॥
फिर जोगनिरोधि अघातिहान । सम्मेदथकी लिय मुक्तिथान ॥१७
'वृन्दावन' वन्दत शीश नाय । तुम जानत हो मम उर जु भाय ॥
तातैं का कहौं सु बार बार । मनवांछित कारज सार सार ॥१८

घत्ता—जय चन्दजिनंदा, आनन्दकन्दा, भवभय भंजन राजे हैं ॥
रागादिकद्वन्दा, हरि सब फन्दा, मुकुतिमांहि थिति साजैं हैं ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्द चौबोला

आठों दरव मिलाय गाय गुण, जो भविजन जिनचंद जजैं ॥
ताके भव भवके अघ भाजैं, मुक्तसार सुख ताहि सजैं ॥ २० ॥
जमके त्रास मिटैं सब ताके, सकल अमंगल दूर भजैं ।
'वृंदावन' ऐसो लखि पूजत, जातैं शिवपुरि राज रजैं ॥ २१ ॥

इत्याशीर्वादः । (पुष्पाजलिं क्षिपेत)

श्री पुष्पदन्त जिनपूजा ।

छन्द—मदावलिप्तकपोल तथा रोडक (मात्रा २४)

पुष्पदन्त भगवन्त सन्त सुजयन्त तन्त गुन ।
महिमावन्त महन्त कंत शिवतियरमन्त मुन ॥
काकंदीपुर जनम पिता सुग्रीवरमासुत ।
स्वेतवरन मनहरन तुम्हें थापों त्रिवार नुत ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

चाल होली की—ताल जत्त ।

मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदन्त जिनराय, मेरी० ॥ टेक ॥
हिमवतगिरिगत गंगाजल भर, कंचनभृङ्ग भराय ।
करमकलंक निवारनकारन, जजों तुम्हारे पाय ॥ मेरी० ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा ।

बावन चंदन कदलीनन्दन, कुंकुमसंग घसाय ।
चरचों चरन हरन मिथ्यातम, वीतराग गुणगाय ॥ मेरी० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा ।

शालि अखंडित सौरभमंडित, शशिसम द्युति दमकाय ।
ताकों पुञ्ज धरों चरननढिग, देहु अखयपद राय ॥ मेरी० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

सुमन सुमनसम परिमलमंडित, गुञ्जत अलिगन आय ।
ब्रह्मपुत्र-मदभंजन कारण, जजों तुम्हारे पाय ॥ मेरी० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

घेवरबावर फेनी गुञ्जा, मोदन मोदक लाय ।
क्षुधावेदनीरोगहरनको, भेंट धरों गुणगाय ॥ मेरी० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वाति कपूर दीप कंचनमय, उज्ज्वल ज्योति जगाय ।
तिमिर-मोहनाशक तुमको लखि, धरों निकट उमगाय ॥ मेरी० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दशवर गंध धनंजय के संग, खेवत हौं गुण गाय ।
अष्टकर्म ये दुष्ट जरैं सो, धूम धूम सु उड़ाय ॥ मेरी० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल मातुलिंग शुचि चिरभट[1], दाड़िम आम मँगाय ।
तासों तुमपदपद्म जजत हों, विघन सघन मिटजाय ॥ मेरी० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल फल सकल मिलाय मनोहर, मनवचतन हुलसाय ।
तुमपद पूजों प्रीति लायकै, जय जय त्रिभुवनराय ॥ मेरी० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१ ककड़ी खरबूजा ।

[पंचकल्याणक अर्घ] [छन्द स्वयंभू, मात्रा ३२]

नवमीतिथिकारी फागुन धारी, गरभमांहि थितिदेवा जी ।
तजि आरणथानं कृपानिधानं, करत सची तित सेवा जी ॥
रतननकी धारा परमउदारा, परी व्योमतैं सारा जी ।
मैं पूजों ध्यावों भगतिबढ़ावों, करो मोहि भवपारा जी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णानवम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

मंगसिर सितपच्छं परिवा स्वच्छं, जनमे तीरथनाथा जी ।
तब ही चवभेवा निरजर येवा, आय नये निजमाथा जी ॥
सुरगिरिनहवाये मंगलगाये, पूजे प्रीति लगाई जी ।
मैं पूजों ध्यावों भगति बढ़ावों, निजनिधिहेत सहाई जी ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाप्रतिपद्दिने जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

सित मंगसिरमासा तिथिसुखरासा, एकमके दिन धारा जी ।
तप आतमज्ञानी आकुलहानी, मौनसहित अविकारा जी ॥

पुष्पमित्र सुदानी के घरआनी, गो-पय-पारन कीना है।
तिनको मैं वन्दों पापनिकंदों, जो समतारसभीना है ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष शुक्ला प्रतिपदि तपमंगलमंडिताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।
सितकातिक गाये दोइज धाये, घातिकरम परचंडा जी।
केवल परकाशे भ्रमतमनाशे, सकल सारसुख मंडाजी ॥
गनराज अठासी आनँदभासी समवसरणवृषदाता जी।
हरि पूजन आयो शीश नमायो, हम पूजैं जगत्राता जी ॥४॥
ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वितीयायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री पुष्पदंतजिनेंद्राय अर्घं नि० ।
आसिन सित सारा आठैं धारा, गिरिसमेद निरवाणा जी।
गुन अष्टप्रकारा अनुपम धारा, जै जै कृपा-निधाना जी ॥
तित इंद्र सु आये पूज रचाये, चिह्न तहां कर दीना है।
मैं पूजत हों गुन ध्याय महीसों, तुमरे रसमें भीना है ॥५॥
ॐ ह्रीं आश्विन शुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अर्घं निर्व० ।

अथ जयमाला ।

दोहा—लच्छन मगर सुश्वेत तन, तुंग धनुष शतएक ॥
सुरनरवंदित मुकतिपति, नमों तुम्हें शिरटेक ॥ १ ॥
पहुपरदन गुनवरन जिम, सागरतोयसमान ॥
क्योंकर कर अंजुलिनकर, करिये तासु प्रमान ॥ २ ॥

छंद तामरस तथा नयमालिनी तथा चंडी (मात्रा १६)

पुष्पदंत जयवंत नमस्ते । पुण्यतीर्थंकर संत नमस्ते ॥
ज्ञानध्यान अमलान नमस्ते । चिद्विलास सुखज्ञान नमस्ते ॥ ३ ॥
भवभय भंजन देव नमस्ते । गुनिगनकृतपदसेव नमस्ते ॥
मिथ्यानिशिदिनइंद नमस्ते । ज्ञानपयोदधिचन्द नमस्ते ॥ ४ ॥
भवदुखतरुनिःकंद नमस्ते । रागदोषमदहंद नमस्ते ॥
विश्वेश्वर गुनभूर नमस्ते । धर्मसुधारसपूर नमस्ते ॥ ५ ॥
केवलब्रह्मप्रकाश नमस्ते । सकल चराचरभास नमस्ते ॥

विघ्नमहीधर-विज्जु नमस्ते । जय ऊरधगतिरिज्जु नमस्ते ॥ ६ ॥
जय मकरकृतपाद नमस्ते । मकरध्वजमदवाद नमस्ते ॥
कर्मभर्मपरिहार नमस्ते । जय जय अधम उधार नमस्ते ॥ ७ ॥
दयाधुरंधर धीर नमस्ते । जय जय गुनगंभीर नमस्ते ॥
मुक्तिरमापति वीर नमस्ते । हरता भवभयपीर नमस्ते ॥ ८ ॥
व्ययउतपतिथिति धार नमस्ते । निज अधार अविकार नमस्ते ॥
भव्यभवोदधितार नमस्ते । वृंदावन निसतार नमस्ते ॥ ९ ॥
घत्ता-जय जय जिनदेवं, हरिकृतसेवं परमधरम-धनधारी जी ॥
मैं पूजों ध्यावौं गुनगन गावौं, मेटो विथा हमारी जी ॥१०॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छंद-मदावलिप्तकपोल ।

पहुपदंतपद संत, जजै जो मन-बच-काई ।
नाचै गावै भगति करै, शुभपरनति लाई ॥

सो पावै सुख सर्व, इंद अहमिंद तनों वर ।
अनुक्रमतैं निरवान, लहै निहश्चै प्रमोदधर ॥ ११ ॥

इत्याशीर्वादः, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

इति श्री पुष्पदन्तजिनपूजा समाप्ता ।

श्रीशीतलनाथ जिनपूजा

छन्द मत्तमातंग तथा मत्तगयद ।

शीतलनाथ नमों धरि हाथ, सु माथ जिन्हों भवगाथ मिटाये ।
अच्युततैं च्युत मातसुनंदके, नंद भये पुरभद्दल आये ॥
वंश इक्ष्वाक कियो जिनभूषित, भव्यन को भव-पार लगाये ।
ऐसे कृपानिधिके पदपंकज, थापतु हौं हिय हर्ष बढ़ाये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अष्टक—छन्द वसंततिलका (वर्ण १४)

देवापगा सुवरवारि विशुद्ध लायौ ।
भृङ्गार हेमभरि भक्ति हिये बढ़ायौ ॥
रागादिदोषमलमर्द्दनहेतु येवा ।
चर्चौं पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीखण्डसारवर कुंकुम गारि लीनों ।
कंसंग स्वच्छ घसि भक्ति हिये धरीनों ॥रा०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुक्तासमान सित तंदुल सार राजैं ।
धारंत पुञ्ज कलिकुंज समस्त भाजैं ॥रा० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीकेतकीप्रमुखपुष्प अदोष लायो ।

नौरंग जंगकरि भृङ्ग सुरंग पायौ ॥ रा० ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्य सार चरु चारु सँवारि लायो ।

जांबूनदप्रभृति भाजन शीस नायौ ॥रा० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्नेहप्रपूरित सुदीपक ज्योति राजै ॥

स्नेहप्रपूरित हिये जजतेऽघ भाजै ॥रा० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कृष्णागुरुप्रमुखगंध हुताशमाहीं ।

खेवों तवाग्र वसुकर्म-जरन्त जाहीं ॥रा०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

निम्बाम्र कर्कटि सु दाड़िम आदि धारा ।

सौवर्णगंध फलसार सुपक्क प्यारा ॥ रा० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

कंश्रीफलादि वसु प्रासुकद्रव्य साजे ।

नाचे रचे मचत बज्जत सज्ज बाजे ॥रा० ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

[पंच कल्याणक अर्घ] [छन्द उपेन्द्रवज्रा वर्ण ११]

आठैं वदी चेत सुगर्भमाहीं । आये प्रभू मंगलरूप थाहीं ।

सेवे सची मातु अनेक भेवा । चर्चौं सदा शीतलनाथ देवा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्व० ।

श्रीमाघकी द्वादशि श्याम जायो । भूलोकमें मंगलसार आयो ॥

शैलेन्द्रपै इन्द्र फनीन्द्र जज्जे । मैं ध्यानधारों भवदुःख भज्जे ॥२॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अर्घं० ।

श्रीमाघकीद्वादशि श्याम जानों । वैराग्य पायो भवभाव हानों ॥

ध्यायो चिदानंद निवार मोहा। चर्चौं सदा चर्ण निवारि कोहा ॥३॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां तपःकल्याणमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व०।

चतुर्दशी पौषवदी सुहायो। ताही दिना केवललब्धि पायो॥

शोभै समोसृत्य बखानिधर्मं। चर्चौं सदा शीतल पर्म शर्मं ॥४॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाचतुर्दश्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व०।

कुँवार की आठँय शुद्धबुद्धा। भये महामोक्षसरूप शुद्धा॥

सम्मेदतैं शीतलनाथ स्वामी। गुनाकरं तासु पदं नमामी ॥५॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्व०।

जयमाला] [छन्द लोलतरंग (वर्ण ११)

आप अनंतगुनाकर राजैं। वस्तुविकाशन भानु समाजैं॥

मैं यह जानि गही शरना है। मोहमहारिपु को हरना है ॥ १ ॥

दोहा— हेम वरन तन तुंग धनु, नव्वै अति अभिराम।

सुरतरु अंक निहारि पद, पुनि पुनि करों प्रणाम ॥ २ ॥

छन्द त्रोटक (वर्ण १२)

जय शीतलनाथ जिनन्द वरं । भवदाघदवानल मेघभरं॥
दुखभूभृतभंजन वज्रसमं । भवसागर नागर पोतपमं ॥ ३ ॥
कुहमानमयागदलोभहरं । अरि विघ्नगयंद मृगेन्द्र वरं ।
वृषवारिदवृष्टन सृष्टिहितू । परदृष्टिविनाशन सुष्टिपितू ॥ ४ ॥
समवस्रतमंजुत राजतु हो । उपमा अभिराम विराजतु हो ।
वर बारहभेद सभा थित को । तित धर्म बखानि कियौ हितको ॥५॥
पहले महि श्रीगनराज रजैं । दुतिये महि कल्पसुरी जु सजैं ॥
त्रितिये गणनी गुनभूरि धरैं । चवथे तियजोतिषजोति भरैं ॥ ६ ॥
तिय व्यंतरनी पनमैं गनिये । छह में भुवनेसुरनी भनिये ॥
भुवनेश दशों थित सत्तम हैं । वसुमें वसुव्यंतर उत्तम हैं ॥ ७ ॥
नवमें नभजोतिष पंच भरे । दशमें दिविदेव समस्त खरे ॥
नरवृन्द इकादश में निवसैं । अरु बारह में पशु सर्व लसैं ॥ ८ ॥

तजि वैर प्रमोद धरैं सब ही । समतारसमग्न लसैं तब ही ॥
धुनि दिव्य सुनैं तजि मोहमलं । गनराज असी धरि ज्ञानबलं ॥९॥
सबके हित तत्त्व बखान करैं । करुनामनरंजित शर्म भरैं ॥
वर्णैं षट्द्रव्यतने जितने । वर भेद विराजतु हैं तितने ॥ १० ॥
पुनि ध्यान उभै शिवहेत मुना । इक धर्म दुती सुकलं अधुना ॥
तित धर्म सुध्यानतणो गनियो । दशभेद लखे भ्रमको हनियो ॥११॥
पहलो अरि नाश अपाय सही । दुतियो जिनबैन उपाय गही ॥
त्रिति जीवविचै निजध्यावत है । चवथो सु अजीव रमावत है ॥१२॥
पनमों सु उदे बलटारन है । छहमों अरिरागनिवारन है ॥
भवत्यागनचिंतन सप्तम है । वसुमों जितलोभन आतम है ॥१३॥
नवमों जिनकी धुनि सीस धरै । दशमों जिनभाषित हेतु करै ॥
इमि धर्मतणो दशभेद भन्यो । पुनि शुक्लतणो चदु येम गन्यो ।१४।

सुपृथक्त्व वितर्कविचार सही । सुइकत्ववितर्क विचार गही ॥
पुनि सूक्ष्मक्रियाप्रतिपात कही । विपरीतक्रियानिरवृत्त लही ॥१५॥
इन आदिक सर्व प्रकाश कियो । भविजीवनिको शिव स्वर्ग दियो ॥
पुनि मोक्षविहार कियो जिनजी । सुखसागर मग्न चिरं गुनजी ॥१६॥
अब मैं शरना पकरी तुमरी । सुधि लेहु दयानिधिजी हमरी ॥
भवव्याधि निवार करो अब ही । मति ढील करो सुख द्यो सब ही ॥१७॥

घत्ता-शीतलजिन ध्याऊं, भक्ति बढ़ाऊं, ज्यों रतनत्रयनिधि पाऊं ।
भवद्वंद नशाऊँ, शिवथल जाऊँ, फेर न भव वनमें आऊं ।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छंद मालिनी—दिढ़रथसुत श्रीमान्, पंचकल्याण धारी ।
तिनपदजुगपद्मं, जो जजै भक्तिधारी ॥
सहसुख धनधान्यं, दीर्घ सौभाग्य पावै ।

अनुक्रम अरि दाहै, मोक्षकों सो सिधावै ॥१६॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

इति श्रीशीतलनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ १० ॥

श्रीश्रेयांसनाथ जिनपूजा ।

छन्द रूपमाला तथा हरिगीता ।

विमलनृप विमलासुअन, श्रेयांसनाथ जिनंद ।
सिंहपुर जनमे सकल हरि पूजि धरि आनन्द ॥
भवबंधध्वंशनहेत लखि मैं शरन आयो येव ।
थापों चरन जुग उर कमलमैं, जजनकारन देव ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांमनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांमनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

छन्द गीता तथा हरिगीता (मात्रा २८)

कलधौतवरन उतंगहिमगिरिपदमद्रहतैं आवई ।

सुरसरित प्रासुकउदकसों भरि भृङ्गधार चढ़ावई ॥

श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवनवंद आनन्दकन्द हैं ।

दुखद्वन्दफंदनिकन्द पूरणचंद जोति अमन्द हैं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा ।

गोशीर वर करपूर कुंकुम नीरसंग घसौं सही ।

भवतापभञ्जनहेत भवदधिसेत-चरण जजों सही ॥श्रे०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा ।

सितशालि शशिदुति शुक्तिसुन्दरमुक्तिकी उनहार हैं ।

भरि थार पुंज धरंत पदतर अखयपद करतार हैं ॥श्रे०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

सदसुमन सुमन समान पावन, मलयतैं अलि झंकरैं ।

पदकमलतर धरतैं तुरति सो मदनको मद क्षय करैं ॥श्रे०॥४

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह परममोदकआदि सरस सँवारि सुन्दर चरु लियो ।
तुम वेदनीमदहरन लखि, चरचौं चरन शुचिकर हियो ।श्रे०।५॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

संशयविमोहविभरम-तम-भंजन दिनंदसमान हो ।
तातैं चरणढिग दीप जोऊँ, देहु अविचलज्ञान हो ॥श्रे०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

वर अगर तगर कपूर चूर सुगंध भूर बनाइया ।
दहि अमरजिह्व[1] विषै चरण ढिग करम भरम जराइया ॥श्रे०॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरलोक अरु नरलोकके फल पक्व मधुर सुहावनें ।
लै भगतिसहित जजौं चरन शिव परमपावन पावने ॥श्रे०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

१ अग्नि मे ।

जलमलयतंदुलसुमनचरु अरु दीपधूपफलावली ।
करि अर्घ चरचों चरणजुगप्रभु मोहि तार उतावली ॥श्रे०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

[पंचकल्याणक अर्घ] [छन्द आर्या]

पुष्पोत्तर तैं आये, विमलाउर जेठकृष्ण आठैंकौं ।
सुरनर मंगल गाये, मैं पूजों नासि कर्मकाठैंकों ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

जनमें फागुणकारी, एकादशि तीनज्ञानदृगधारी ।
इक्ष्वाकवंशतारी, मैं पूजौं घोर विघ्न दुखटारी ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

भवतनभोग असारा, लख त्यागो धीर शुद्ध तपधारा ।
फागुनवदि इग्यारा, मैं पूजौं पाद अष्ट प्रकारा ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णामावस्यायां निःक्रमणमहोत्सवमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

केवलज्ञान सुजानन, माघवदी पूर्णतिथिको देवा ।
चतुरानन भवभानन, बंदौं ध्यावौं करौं सुपदसेवा ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णामावस्यायां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

गिरिसमेदतैं पायो, शिवथल तिथि पूर्णमासि सावनको ।
कुलिशायुध गुनगायो, मैं पूजौं आप निकट आवनको ॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लापूर्णिमायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्व० ।

[जयमाला]

[छन्द लोलतरग वर्ण १२]

शोभित तुंग शरीर सुजानो । पांच असी शुभलच्छन मानो ॥
कंचनवर्ण अनूपम सोहै । देखत रूप सुरासुर मोहै ॥ १ ॥

पद्धरी- जै जै श्रेयांस जिन गुणगरिष्ठ । तुमपदजुगदायक इष्टमिष्ट ॥
जै शिष्टशिरोमणि जगतपाल । जै भविसरोजगन प्रातकाल ।२।
जै पंचमहाव्रतगजसवार । लै त्यागभावदलबल सु लार ॥
जै धीरजको दलपति बनाय । सत्ताछितिमहं रणको मचाय ॥३॥

धरि रतन तीन तिहुं शक्तिहाथ । दशधरमकवच तपटोप माथ ॥
जै शुक्लध्यानकर खड्‌गधार । ललकारे आठौं अरि प्रचार ॥४॥
तामैं सबको पति मोहचंड । ताको ततछिन करि सहस खंड ।
फिर ज्ञानदरशप्रत्यूह हान । निजगुणगढ लीनों अचलथान ॥५॥
शुचि ज्ञान दरश सुख वीर्य सार । हुव समवशरणरचना अपार ॥
तित भाषं तत्त्व अनेक धार । जाकों सुनि भव्य हिये विचार ॥६॥
निजरूप लह्यो आनन्दकार । भ्रम दूरकरनको अति उदार ॥
पुनि नयप्रमाण निक्षेपसार । दरशायो करि संशयप्रहार ॥७॥
तामैं प्रमान जुग भेद एव । परतक्ष परोक्ष रजै सुमेव ॥
तामैं प्रतक्षके भेद दोय । पहिलो है संव्यवहार सोय ॥८॥
ताके जुगभेद विराजमान । मति श्रुति सोहैं सुन्दर महान ॥
है परमारथ दुतियां प्रतच्छ । है भेद जुगम तामाहिं दच्छ ॥९॥

इक एकदेश इक सर्व देश । इकदेश उभैविधि सहित वेश ॥
वर अवधि सु मनपरजै विचार । है सकलदेश केवल अपार ॥१०॥
चरअचर लखत जुगपत प्रत्यक्ष । निरद्वन्दरहित परपंचपक्ष ॥
पुनि है परोक्षमहँ पंच भेद । स्मरिति अरु प्रत्यभिज्ञानवेद ॥११॥
पुनि तर्क और अनुमान मान । आगमजुत पन अब नय बखान ॥
नैगम संग्रह व्यवहार गूढ़ । ऋजुसूत्र शब्द अरु समभिरूढ ॥१२॥
पुनि एवंभूत सु सप्त एव । नय कहे जिनेसुर गुन जु तेव ॥
पुनि द्रव्यक्षेत्र अर काल भाव । निक्षेप चार विधि इमि जनाव ॥१३॥
इनको समस्त भाष्यो विशेष । जा समुझत भ्रम नहिं रहत लेश ॥
निज ज्ञानहेत ये मूलमंत्र । तुम भाषे श्रीजिनवर सु तंत्र ॥१४॥
इत्यादि तत्त्वउपदेश देय । हनि शेषकरम निर्वाण लेय ॥
गिरवान जजत वसु दरव ईश । 'वृन्दावन' नितप्रति नमत शीश ॥१५॥

घत्ता—श्रेयांस जिनेशा सुगुन महेशा, वज्र धरेशा ध्यावत हैं।
हम निशिदिन वंदैं, पापनिकंदैं, ज्यों सहजानंद पावतु हैं ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा—जो पूजै मनलाय, श्रेयनाथपदपद्म को ॥
पावै इष्ट अघाय, अनुक्रमसौं शिवतिय वरैं ॥१॥

इत्याशीर्वाद, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्

इति श्रीश्रेयांसनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ ११ ॥

श्री वासुपूज्य जिनपूजा।

छन्द रूपकवित्त।

श्रीमतवासुपूज्य जिनवरपद, पूजनहेत हिये उमगाय।
थापों मनवचतन शुचि करिकै, जिनकी पाटलदेव्या माय ॥
महिष चिह्न पद लसै मनोहर, लाल वरन तन समतादाय।
सो करुणानिधि कृपादृष्टिकरि तिष्ठहु सुपरितिष्ठ यहं आय ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर, संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

[छन्द जोगीरासा । आंचलीबन्द अष्टक]

गंगाजल भरि कनककुंभमें, प्रासुक गंध मिलाई ।
कर्म कलंक विनाशन कारन, धार देत हरषाई, जिनपद पूजों मनलाई ।
वासुपूज्यवसुपूजतनुजपद, वासव सेवत आई ।
बालब्रह्मचारी लखि जिनकों, शिवतिय सन्मुख धाई ॥ जिन० ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं० नि० स्वाहा ।

कृष्णागरु मलयगिर चन्दन, केशरसंग घसाई ।
भवआताप निवारणकारण, पूजों पद चित लाई ॥ जिन० वासु० ॥२॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

देवजीर सुखदास शुद्ध वर, सुवरणथाल भराई ।

पुंज धरत तुम चरणन आगैं, तुरित अखय पदपाई ॥जिन०वासु॥३॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।
पारिजात संतानकल्पतरु,–जनित सुमन बहु लाई ।
मीनकेतुमदभंजन कारन, तुम पदपद्म चढ़ाई ॥जिन० वासु०॥४॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।
नव्यगव्य आदिकरसपूरित, नेवज तुरित उपाई ।
क्षुधारोग-निरवारन कारण, तुम्हें जजौं शिरनाई ॥जिन० वासु०॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
दीपक ज्योत उदोत होत वर,दशदिशमें छवि छाई ।
तिमिर मोहनाशक तुमको लखि, जजों चरन हरषाई॥जिन०वासु०॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
दशविधि गंधमनोहर लेकर, वातहोत्र में ढाई ।
अष्ट करम ये दुष्ट जरतु हैं, धूम सु धूम उड़ाई ॥जिन०वासु०॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरस सुपक्वसुपावन फल लै, कंचनथाल भराई ।
मोक्ष महाफलदायक लखिप्रभु, भेंट धरों गुनगाई ॥ जिन० वासु० ॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
जलफल दरब मिलाय गाय गुण, आठों अंग नमाई ।
शिवपदराजहेत हे श्रीपति ! निकट धरों यह लाई ॥ जिन०वासु० ॥
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

[पंच कल्याणक अर्घ] [छन्द पाईत्ता मात्रा १४]

कलि छट्ट असाढ़ सुहायो । गरभागम मंगल गायो ॥
दशमें दिवितें इत आये । शतइन्द्र जजे शिर नाये ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं आषाढकृष्णाषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।
कलि चौदश फागुन जानों । जनमें जगदीश महानों ।
हरि मेरु जजें तब आई । हम पूजत हैं चितलाई ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं निर्व० ।

तिथि चौदस फागुन श्यामा । धरियो तप श्री अभिरामा ।
नृप सुन्दर के पय पायो । हम पूजत अतिसुख थायो ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां तपमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

वदि भादव दोइज सोहै । लहि केवल आतम जो है ।
अनअन्त गुणाकर स्वामी । नित बंदों त्रिभुवन नामी ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णाद्वितीयायां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं निर्व० ।

सित भादव चौदशि लीनों । निरवान सुथान प्रवीनों ।
पुर चंपाथानकसेती । हम पूजत निजहित हेती ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय अर्घं निर्व० ।

जयमाला ।

दोहा—चंपापुरमें पंचवर, कल्याणक तुम पाय ।
मत्तर धनु तन शोभनो, जय जय जय जिनराय ॥ १ ॥

छन्द मदावलिप्तकपोल—मोतियदाम (वर्ण १२)

महासुखसागर आगर ज्ञान। अनंत सुखामृतभुक्त महान ॥
महाबलमंडित खंडितकाम। रमाशिवसंग सदा विसराम ॥ २ ॥
सुरिन्द फनिंद खगिंद नरिंद। मुनिंद जजैं नित पादरविंद ॥
प्रभू तुव अंतरभाव विराग। सुबालहितैं व्रतशीलसों राग ॥ ३ ॥
कियो नहिं राज उदाससरूप। सुभावन भावत आतम रूप ॥
अनित्य शरीर प्रपंच समस्त। चिदातम नित्य सुखाश्रित वस्त ॥४॥
अशर्न नहीं कोउ शर्न सहाय। जहां जिय भोगत कर्मविपाय ॥
निजातम के परमेसुर शर्न। नहीं इनके विन आपदहर्न ॥ ५ ॥
जगत्त जथा जलबुदबुद येव। सदा जिय एक लहै फलभेव ॥
अनेकप्रकार धरी यह देह। भ्रमें भवकानन आन न नेह ॥ ६ ॥
अपावन सात कुधात भरीय। चिदातम शुद्धस्वभाव धरीय ॥
धरे इनसों जब नेह तबेव। सुआवत कर्म तबै वसुभेव ॥ ७ ॥

जबै तनभोगजगत्तउदास । धरै तब संजम निर्जर आस ॥
करै जब कर्मकलंक विनाश । लहै तब मोक्ष महासुखराश ॥ ८ ॥
तथा यह लोक नराकृत नित्त । विलोकियते षटद्रव्यविचित्त ॥
सु आतमजानन वोधविहिन । धरै किन तत्त्वप्रतीत प्रवीन ॥ ९ ॥
जिनागमज्ञानरु संजमभाव । सबैं निजज्ञान विना विरसाव ॥
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल । सुभाव सबैं जिहतें शिव हाल ॥१०॥
लह्यो सब जोग सुपुन्य वशाय । कहो किमि दीजिय ताहि गंवाय ॥
विचारत यों लौकांतिक आय । नमें पदपंकज पुष्प चढ़ाय ॥ ११ ॥
कह्यो प्रभु धन्य कियो सुविचार । प्रवोधि सु येम कियो जु विहार ॥
तबै सौधर्मतनों हरि आय । रच्यौ शिविका चढ़ि आप जिनाय ।१२।
धरे तप पाय सुकेवलवोध । दियो उपदेश सुभव्य संवोध ॥
लियो फिर मोक्ष महासुखराश । नमैं नित भक्त सोई सुखआश ॥१४॥

घत्ता—नित वासववन्दत, पापनिकंदत, वासपूज्य व्रत ब्रह्मपति ॥
भवसंकलखंडित, आनंदमंडित, जै जै जै जैवंत जती ॥१४॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा—वासपूज्यपद सार, जजैं द्रव्यविधि भावसों ।
सो पावै सुखसार, भुक्ति मुक्तिको जो परम ॥ १५ ॥

इत्याशीर्वाद.। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

इति श्रीवासुपूज्यजिनपूजा समाप्ता ॥ १२ ॥

श्रीविमलनाथ जिनपूजा ।

छन्द मदावलिप्तकपोल (मात्रा २४)

सहस्रार दिवि त्यागि, नगर कंपिला जनम लिय ।
कृतधर्मानृपनन्द, मातु जयसेन धर्मप्रिय ॥
तीन लोक चिरनन्द, विमल जिन विमलकर ।
थापों चरनसरोज, जजन के हेतु भावधर ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर । संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अष्टक—सोरठा छंद ।

कंचनझारी धारि, पदमद्रहको नीर ले ।
तृषा-रोग-निरवारि, विमल विमलगुण पूजिये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा ।

मलयागर करपूर, देववल्लभा[1] संग घसि ।
हरि मिथ्याऽऽतपभूर, विमल विमलगुण जजतु हों ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि० स्वाहा ।

वासमती सुखदास, श्वेत निशापतिको हँसे ।
पूरै वांछित आस, विमल विमलगुण जजत ही ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१ केशर।

पारिजात मन्दार, सन्तानकसुरतरुजनित ।
जजों सुमन भरि थार, विमल विमलगुण मदनहर ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं विमलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नव्य–गव्य रसपूर, सुवरणथाल भरायकैं ।
क्षुधा–वेदनी चूर, जजों विमलपद विमलगुण ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मानिक दीप अखण्ड, गो छाई वर गौं दशों ।
हरो मोहतम चंड, विमल विमलमतिके धनी ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति ।

अगर तगर घनसार, देवदारु करपूर वर ।
खेवों वसु अरि जार, विमल विमलपदपद्मढिग ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति ।

श्रीफल सेव अनार, मधुर रसीले पावने ॥
जजों विमलपद सार, विघ्न हरैं शिवफल करैं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

आठों दरव सँवार, मनसुखदायक पावने ।
जजों अरघ भरथार, विमल विमलशिवतिय-रमन ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

[पंचकल्याणक अर्घ] [छन्द द्रुतविलंवित तथा सुन्दरी (वर्ण १२)]

गरभ जेठवदी दशमी भनों । परम पावन सो दिन शोभनों ॥
करत सेव शची जननीतणी । हम जजैं पदपद्म शिरोमणी ॥१॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णादशम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्व० ।

शुकलमाघ तुरी तिथि जानिये । जनममंगल तादिन मानिये ॥
हरि तवे गिरिराज विषैं जजे । हम समर्चत आनंद को सजे ॥२॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

तप धरे सितमाघ तुरी भली। निज सुधातम ध्यावत हैं रली॥
हरि फनेश नरेश जजे तहां। हम जजैं नित आनंदसों इहां॥३॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां निःक्रमणमहोत्सवमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घं० नि०

विमल माघरसी[1] हनि घातिया। विमलबोध लयो सब भासिया॥
विमल अर्घ चढ़ाय जजों अबै। विमल आनंद देहु हमैं सबै॥४॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाषष्ठ्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०।

भ्रमरसाढ़रसी अति पावनों। विमल सिद्ध भये मनभावनों॥
गिरिसमेद हरी तित पूजिया। हम जजैं इतहर्ष धरें हिया॥५॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णाषष्ठ्यां मोक्षमंगलप्राप्तये श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व०।

[जयमाला]

दोहा। अति उपमालंकार।

गगन चहत उड़गन गगन, छिति थितिके छँह जेम।
तिमि गुन वरनन वरननन, माहिं होय तव केम॥ १॥

[1] षष्ठी।

साठधनुप तन तुंग है, हेमवरन अभिराम ।
वर वराह पद अंक लखि, पुनि पुनि करों प्रनाम ॥ २ ॥

छंद तोटक । (वर्ण १२) ।

जय केवलब्रह्म अनन्तगुनी । तुव ध्यावत शेष महेश मुनी ॥
परमातम पूरन पाप हनी । चितचिंततदायक इष्ट धनी ॥ ३ ॥
भवआतपध्वंसन इंदुकरं । वर साररसायन शर्मभरं ॥
सब जन्मजरामृतदाघहरं । शरणागतपालन नाथ वरं ॥ ४ ॥
नित संत तुम्हें इन नामनितैं । चितचिंतत हैं गुणगामनितैं ॥
अमलं अचलं अटलं अतुलं । अरलं अछलं अथलं अकुलं ॥ ५ ॥
अजरं अमरं अहरं अडरं । अपरं अभरं अशरं अनरं ॥
अमलीन अछीन अरीन हने । अमतं अगतं अरतं अघने ॥ ६ ॥
अछुधा अतृपा अभयातम हो । अमदा अगदा अवदातम हो ॥

अविरुद्ध अक्रुद्ध अमानधुना । अतलं अशलं अनअंत गुना ॥७॥
अरसं सरसं अकलं सकलं । अवचं सवचं अमलं सबलं ॥
इन आदि अनेकप्रकार सही । तुमको जिन संत जपैं नित ही ॥८॥
अव मैं तुमरी शरना पकरी । दुख दूर करो प्रभुजी हमरी ॥
हम कष्ट सहे भवकाननमें । कुनिगोद तथा थल आननमें ॥९॥
तित जामनमर्न सहे जितने । कहि केम सकैं तुमसों तितने ॥
सुमुहूरत अन्तरमाहिं धरे । छह[1] त्रै त्रय छः छहकाय खरे ॥१०
छिति वह्नि वयारिक साधरनं । लघु थूल विभेदनिसों भरनं ॥
प्रत्येक वनस्पति ग्यारभये । छहजार दुवादश भेद लये ॥ ११ ॥
सव द्वै त्रय भू षट छःसु भया । इक इन्द्रिय की परजाय लया ॥
जुग इन्द्रिय काय असी गहियो । तिय इन्द्रिय साठनिमें रहियो ॥१२॥

[1] ६६३२६ ।

चतुरिंद्रिय चालिस देह धरा । पनइन्द्रियके चववीस वरा ॥
सव ये तन धार तहां सहियो । दुखघोर चितारित जात हियो ॥१३॥
अव मो अरदास हिये धरिये । दुखद्वंद सवै अव ही हरिये ॥
मनवंछित कारज सिद्ध करो । सुखसार सवै घर ऋद्धि भरो ॥१४॥

घत्ता—जे विमलजिनेशा, नुतनाकेशा, नागेशा नरईश सदा ॥
भवतापअशेषा हरननिशेषा, दाता चिन्तित शर्म सदा ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा—श्रीमत विमलजिनेशपद, जो पूजें मनलाय ।
पूरें वांछित आश तसु, मैं पूजों गुणगाय ॥ १६ ॥

इत्याशीर्वाद', परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

इति श्री विमलनाथ पूजा समाप्ता ॥ १३ ॥

श्रीअनन्तनाथ जिनपूजा ।

कवित्त छन्द (मात्रा ३१)।

पुष्पोत्तर तजि नगर अजुध्या, जनम लियो सूर्याउरआय ।
सिंहसेन नृपके नन्दन, आनन्द अशेष भरे जगराय ॥
गुन अनंत भगवंत धरे, भवद्वंद हरे तुम हे जिनराय ।
थापतु हों त्रयवार उचरिकै, कृपासिन्धु तिष्ठहु इत आय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर, संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

[अष्टक] छंद गीता तथा हरिगीता (मात्रा २८) ।

शुचि नीर निरमल गंगको लै, कनकभृंग भराइया ।
मलकरम धोवन हेत मन वच, काय धार ढराइया ॥
जगपूज परमपुनीत मीत, अनंत संत सुहावनों ।

शिवकन्तवन्त महन्त ध्यावों, भ्रंततन्त नशावनों ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिचंद कदलीनंद कुंकुम, दंदताप निकंद है ।
भव पापरुजसंतापभंजन, आपको लखि चंद है ॥ज०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

कनशालदुति उजियाल हीर, हिमालगुलकनितैं घनी ।
तसु पुंज तुम पदतर धरत, पद लहत स्वच्छ सुहावनी ॥ज०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्कर अमरतरु जनित वर, अथवा अवर कर लाइया ।
तुम चरण पुष्करतर धरत, सब समरशूल नशाइया॥ज०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

पकवान नैना घ्राण रसना—को प्रमोद सुदाय है ।
सो ल्याय चरण चढ़ाय रोग, क्षुधाय नाश कराय है ॥ज०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तममोहभानन जानि आनँद, आनि शरण गही अवैं ।
वर दीप धारौं वार तुमढिग, सुपरज्ञान जु द्यो सबै ॥ज०॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
यह गंध चूरिदशांग सुन्दर, धूम्रध्वजमें खेय हों ।
वसुकर्म भर्म जराय तुम ढिग, निजसुधातम वेय हों ॥ज०॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
रमथक्क पक्क सुभक्ख चक्ख, सुहावनें, मृदुपावनें ।
फलभारवृन्द अमन्द ऐसो, ल्याय पूज रचावनें ॥ ज० ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
शुचिनीर चंदन शालिशंदन, सुमन चरु दीवाधरों ।
अरु धूप जुत फल अर्घ करि, करजोरजुग विनती करों ॥ज०॥९॥
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

[पंच कल्याणक अर्घ] छन्द सुन्दरी तथा द्रुतविलंवित ।

असित-कातिक एकम भावनों । गरभको दिन सों गिन पावनों ।
किय सची तित चर्चन चावसौं । हम जजैं इत आनंद भावसौं ॥१॥
ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाप्रतिपदि गर्भमंगलमंडिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

जनम जेठबदी तिथि द्वादशी । सकलमंगल लोकविषैं लसी ।
हरि जजे गिरिराज समाजतैं । हम जजैं इत आतमकाजतैं ॥२॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

भवशरीर विनश्वर भाइयो । असित जेठदुवादशि गाइयो ।
सकल इन्द्र जजे तित आइकैं । हम जजैं इत मंगल गाइकैं ॥३॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां निःक्रमणमहोत्सवमंडिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

असितचैत अमावस को सही । परम केवलज्ञान जग्यो कही ।
लहि समोसृत धर्म धुरंधरो । हम समर्चित विघ्न सबैं हरो ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यायां केवलज्ञानप्राप्तये श्री अनंतनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

असित चैत तुरी तिथि गाइयौ । अघतघाति हने शिवपाइयौ ।
गिरि समेद जजैं हरि आयकैं । हम जजैं पद प्रीति लगाइकैं ॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां मोक्षमंगलप्राप्तये श्री अनंतनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

[जयमाला]

दोहा—(विशेषोक्ति अलंकार)

तुम गुनवरनन येम जिम, खंविहाय करमान ।
तथा मेदिनी पदनि करि, कीनों चहत प्रमान ॥१॥
जय अनंत रवि भव्यमन, जलजवृन्द विहसाय ।
सुमति कोकतियथोक सुख, वृद्ध कियो जिनराय ॥२॥

छन्द नयमालिनी, चंडी तथा तामरस (मात्रा १६)

जै अनंत गुनवन्त नमस्ते । शुद्धध्येय नितसंत नमस्ते ।
लोकालोक विलोक नमस्ते । चिन्मूरत गुणथोक नमस्ते ॥३॥
रत्नत्रयधर धीर नमस्ते । करमशत्रुकरिकीर नमस्ते ।
च्यार अनन्त महंत नमस्ते । जै जै शिवतियकन्त नमस्ते॥४॥

पंचाचार विचार नमस्ते । पंचवर्णमदहार नमस्ते ।
पंच पराव्रत चूर नमस्ते । पंचमगति सुखपूर नमस्ते ॥५॥
पंच लब्धिधरनेश नमस्ते । पंच भाव सिद्धेश नमस्ते ।
छहों दरबगुनजान नमस्ते । छहों काल पहिचान नमस्ते ॥६॥
छहोंकायरच्छेश नमस्ते । छहसम्यक उपदेश नमस्ते ।
सप्तविशनवनवह्नि नमस्ते । जय केवल अपरह्नि नमस्ते ॥७॥
सप्ततत्त्वगुन भनन नमस्ते । सप्तशुभ्रगत हनन नमस्ते ।
सप्तभङ्ग के ईश नमस्ते । सातों नयकथनीश नमस्ते ॥८॥
अष्ट करममलदल्ल नमस्ते । अष्ट जोगनिरशल्ल नमस्ते ।
अष्टम धराधिराज नमस्ते । अष्ट गुननि सिरताज नमस्ते ॥९॥
जै नवकेवल प्राप्त नमस्ते । नव पदार्थतिथि आप्त नमस्ते ।
दशों धरमधरतार नमस्ते । दशौं बन्धपरिहार नमस्ते ॥ १०॥

विघ्न—महीधर—विज्जु नमस्ते । जै ऊरधगति रिज्जु नमस्ते ।
तनकनकं दुति पूर नमस्ते । इच्वाकजगनसूर नमस्ते ॥११॥
धनु पचासतन उच्च नमस्ते । कृपासिंधु गुन शुच्च नमस्ते ।
सेही अङ्क निशंक नमस्ते । चितचकोर मृगअङ्क नमस्ते ॥१२॥
राग दोपमदटार नमस्ते । निजविचार दुखहार नमस्ते ।
सुर सुरेश गन बन्द नमस्ते । 'वृन्द' करो सुखकन्द नमस्ते ॥१३॥

घत्ता—जय जय जिनदेवं, सुरकृतसेवं, नितकृतचित हुल्लासधरं ।
आपदउद्धारं, समतागारं, वीतरागविज्ञान भरं ॥१४॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्द रोड़क—जो जन मनवचनकायलाय, जिन जजै नेह धर ।
वा अनुमोदन करे करावै, पढ़ै पाठ वर ॥
तांके नित नव होय, सुमङ्गल आनन्द दाई ।

अनुक्रमतें निरवान, लहै सामग्री पाई ॥ १ ॥

इत्याशीर्वाद । परिपुष्पाजलिं क्षिपेत् । इति श्री अनंतनाथजिन पूजा समाप्ता ॥१४॥

श्रीधर्मनाथ जिनपूजा ।

छन्द माधवी तथा किरीट (८ सगण व गुरु)।

तजिके सरवारथ सिद्ध विमान, सुभानके आनि अनंद बढ़ाये ।
जगमातसुव्रत्तिके नंदन होय, भवोदधि डूबत जंतु कढ़ाये ॥
जिनको गुन नामहिं माहिं प्रकाश, है दासनिको शिवस्वर्ग मंढ़ाये ।
तिनके पद पूजन हेत त्रिबार, सुथापतु हों यह फूल चढ़ाये ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर, संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ट तिष्ठ, ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

[अष्टक]

छंद जोगीरासा (मात्रा २८)।

मुनि मनसम शुचि शीर नीर अति, मलय मेलि भरि झारी ।
जनमजरामृत तापहरन को, चर्चौं चरण तुम्हारी ॥
परमधरम—शम-रमन धरम—जिन, अशरन शरन निहारी ।
पूजों पाय गाय गुन सुन्दर, नाचौं दै दै तारी ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

केशर चंदन कदली नंदन, दाहनिकंदन लीनों ।
जलसंगघसि लसि शशिसमशमकर, भव आताप हरीनों ॥पर०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

जलज जीर सुखदास हीर हिम, नीर किरनसम लायो ।
पुंज धरत आनंद भरत भव,-द्वंद हरत हरपायो ॥पर० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

सुमन सुमनसम सुमनथालभर, सुमनवृन्द विहँसाई ।

सुमन-मथ-मदमंथन के कारन, चरचों चरण चढ़ाई ।।पर० ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

घेवर बावर अर्द्ध चन्द्र सम, छिद्र सहस्र विराजै ।

सुरस मधुर तासों पद पूजत, रोग असाता भाजै ।।पर० ।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुंदर नेह सहित वर दीपक, तिमिर हरन धरि आगै ।

नेह सहित गाऊं गुन श्रीधर, ज्यों सुबोध उर जागै ।।पर०।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अगर तगर कृष्णागर तर दिव, हरिचंदन करपूरं ।

चूर खेय जलजवनमहिं जिमि, करम जरैं वसु क्रूरं ।।पर०।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

आम्र काम्रक अनार सारफल, भार मिष्ट सुखदाई ।

सो लै तुमढिग धरहुं कृपानिधि, देहु मोक्षठकुराई ।।पर०।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

आठों दरब साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गुनगाई ।
बाजत द्रम द्रम द्रम मृदंग गत, नाचत ता थेई थाई ॥ पर०६॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

[पंचकल्याणक अर्घ] [राग टप्पा की चाल]

पूजों हों अबार, धरमजिनेसुर पूजों, पूजों हो । टेक ।
आठैं सित वैशाखकी हो, गरभदिवस अविकार ॥
जगजन वंछित पूजों, पूजों हो अबार, धरमजिनेसुर पूजों ॥१

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्व० ।

शुकल माघ तेरस लह्यो हो, धरम धरम अवतार ।
सुरपति सुरगिर पूजों, पूजों हो अबार ॥ धरम० ॥२॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

माघशुकल तेरस लह्यो हो, दुद्धर तप अविकार ।

सुरऋषि सुमनिनि पूजों, पूजों हो अबार ॥ धरम० ॥३॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां निःक्रमणमहोत्सवमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि. ।

पोषशुकल पूनम हने अरि, केवल लहि भवितार ।

गनसुर नरपति पूजों, पूजों हो अबार ॥ धरम० ॥४॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लापूर्णिमायां केवलज्ञानमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

जेठशुकल तिथि चौथकी हो, शिव समेदतें पाय ।

जगतपूजपद पूजों, पूजों हो अबार ॥ धरम० ॥५॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाचतुर्थ्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

जयमाला] दोहा (विशेषोक्ति अलंकार)

घनाकार करि लोक पट, सकल उदधि मसि तंत ।

लिखै शारदा कलम गहि, तदपि न तुव गुन अंत ॥१॥

छन्द पद्धरी (मात्रा १६)

जय धरमनाथ जिन गुणमहान । तुम पदकों मैं नित करों ध्यान ।

जय गरभजनम तप ज्ञानजुक्त । वर मोक्ष सुमङ्गल शर्म–भुक्त ॥२॥
जय चिदानन्द आनन्द कंद । गुनवृन्द सु ध्यावत मुनि अमन्द ।
तुम जीवनि के विनु हेत मित्त । तुम ही हो जग में जिन पवित्त ॥३
तुम समवसरण में तत्त्वसार । उपदेश दियो है अति उदार ।
ताकों जे भवि निज हेत चित्त । धारैं ते पावैं मोक्ष वित्त ॥४॥
मैं तुम मुख देखत आज पर्म । पायो निजआतमरूप धर्म ॥
मोकों अब भौभयतैं निकार । निरभयपद दीजे परमसार ॥५॥
तुम सम मेरो जगमें न कोय । तुमहीतैं सब विधि काज होय ॥
तुम दयाधुरन्धर धीर वीर । मेटो जगजन की सकल पीर ॥६॥
तुम नीतिनिपुन विनरागदोष । शिवमग दरशावतु हो अदोष ॥
तुम्हरे ही नामतने प्रभाव । जग जीव लहें शिव-दिव-सुराव ॥७॥
तातैं मैं तुमरी शरण आय । यह अरज करतु हों शीस नाय ॥

भवबाधा मेरी मेट मेट । शिवराधासों करि भेट भेट ॥८॥
जंजाल जगतको चूर चूर । आनंद अनूपम पूर पूर ॥
मति देर करो सुनि अरज एव । हे दीनदयाल जिनेश देव ॥९॥
मोंकों शरणा नहिं और ठौर । यह निहचै जानों सुगुन-मौर ॥
"वृन्दावन" वंदत प्रीति लाय । सब विघन मेटिये धरम-राय ॥१०

(घत्ता मात्रा ३१) जय श्रीजिनधर्मं, शिवहितपर्मं श्रीजिनधर्मं उपदेशा ।
तुमदयाधुरंधर, विनतपुरंदर, कर उरमंदिर परवेशा ॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छंद मदावलिप्तकपोल—जो श्रीपतिपद जुगल, उगल मिथ्यात जजै भव ।
ताके दुख सब मिटहिं, लहै आनंदसमाज सव ॥
सुर-नरपति-पद भोग, अनुक्रमतैं शिव जावै ।
"वृन्दावन" यह जानि धरम, जिनके गुन ध्यावै ॥

इत्याशीर्वादः, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् । इति (श्रीधर्मनाथजिनपूजा समाप्ता)

श्रीशान्तिनाथ जिनपूजा ।

मत्तगयन्द छन्द । (शब्दाडम्बर तथा जमकालकार) ।

या भवकाननमें चतुरानन, पापपनानन घेरि हमेरी ।
आतमजान न मान न ठान न, बान न होइ दई सठ मेरी ॥
तामद भानन आपहि हो, यह छान न आन न आननटेरी ।
आनगही शरनागतको, अब श्रीपतजी पत राखहु मेरी ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर, संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

[अष्टक] छंद त्रिभगी । अनुप्रयासक । (मात्रा ३२ जगनवर्जित) ।

हिमगिरिगतगंगा, धार अभंगा, प्रासुक सङ्गा, भरि भृङ्गा ।

जरजन्ममृतंगा, नाशि अघंगा, पूजिपदंगा मृदुहिंगा ॥
श्रीशान्तिजिनेशं, नुतनाकेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं ।
हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं, दयामृतेशं मक्रेशं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा ।

वर बावनचंदन, कदलीनंदन, घनआनंदन सहित घसों ।
भवतापनिकन्दन, ऐरानन्दन, वंदि अमंदन, चरनवसौं ॥श्री०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चदनं नि० स्वाहा ।

हिमकरकर लज्जत, मलयसुसज्जत, अच्छत जज्जत, भरिथारी ।
दुखदारिद गज्जत, सदपदसज्जत, भवभयभज्जत अतिभारी ॥श्री० ३॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व० स्वाहा ।

मंदार सरोजं कदली जोजं, पुंज भरोजं, मलयभरं ।
भरि कंचनथारी, तुमढिग धारी, मदनविदारी, धीरधरं ॥श्री०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

पक्वान नवीने, पावन कीने, षटरसभीने सुखदाई ।
मनमोदनहारे, क्षुधा विदारे, आगैं धारे, गुनगाई ॥श्री० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम ज्ञानप्रकाशे, भ्रमतमनाशे, ज्ञेयविकाशे सुखरासे ।
दीपक उजियारा, यातैं धारा, मोह निवारा, निजभासे ॥श्री० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन करपूरं, करिवर चूरं, पावक भूरं, माहिजुरं ।
तसु धूम उड़ावे, नाचत आवे, अलि गुंजावै, मधुरसुरं ॥श्री०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा ।

बादाम खजूरं, दाड़िम पूरं, निंबुक भूरं, लै आयो ।
तासों पद जजों शिवफल सजों, निजरसरजों, उमगायो ॥श्री० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० स्वाहा ।

वसु द्रव्य सँवारी, तुमढिग धारी, आनन्दकारी दृगप्यारी ।
तुम हो भवतारी, करुणाधारी, यातैं थारी शरणारी ॥श्री०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

[पंच कल्याणक अर्घ] सुन्दरी तथा द्रुतविलम्बित छन्द ।

असित सातंय भादव जानिये । गरभमंगल तादिन मानिये ॥
सचि कियो जननी पद चर्चनं । हम करैं इत ये पद अर्चनं ॥१॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

जनम जेठ चतुर्दशि श्याम है । सकलइन्द्र सु आगत धाम है ॥
गजपुरै गज साजि सबैं तबैं । गिरि जजैं इतमैं जजि हों अबैं ॥२॥

ॐ ह्रीं जेष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममंगलप्राप्तये श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

भव शरीर सुभोग असार हैं । इमि विचार तबै तप धार हैं ॥
भ्रमर चोदशि जेठ सुहावनी । धरमहेत जजों गुन पावनी ॥३॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां निःक्रमणमहोत्सवमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

शुक्लपौष दशैं सुखराश है। परम—केवल—ज्ञान प्रकाश है ॥
भवसमुद्र—उधारन देवकी । हम करैं नित मंगल सेवकी ॥४॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लादशम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

असित चौदशि जेठ हनें अरी। गिरि समेदथकी शिव-तिय वरी ॥
सकलइन्द्र जजैं तित आइकैं। हम जजैं इत मस्तक नाइकैं ॥५॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलप्राप्तये श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

[जयमाला] छंद रथोद्धता, चंद्रवत्स तथा चंद्रवर्त्म (वर्ण ११—लाटानुप्रास)

शान्ति शांतिगुनमंडिते सदा। जाहि ध्यावत सुपंडिते सदा ॥
मैं तिन्हें भगतमंडिते सदा। पूजिहों कलुषहंडिते सदा ॥१॥
मोक्षहेतु तुम ही दयाल हो। हे जिनेश गुनरत्नमाल हो ।
मैं अबै सुगुनदाम ही धरों। ध्यावतें तुरित मुक्ति-ती वरों ॥२॥

छन्द पद्धरि (१६ मात्रा)

जय शान्तिनाथ चिद्रूपराज । भवसागरमें अद्भुत जहाज ॥
तुम तजि सरवारथसिद्धथान । सरवारथजुत गजपुर महान ॥१॥
तित जनम लियौ आनन्द धार । हरि ततछिन आयो राजद्वार ॥
इन्द्रानी जाय प्रसूतथान । तुमको करमें लै हरष मान ॥२॥
हरि गोद देय सो मोदधार । सिर चमर अमर ढारत अपार ॥
गिरिराज जाय तित शिला पांड । तापै थाप्यौ अभिषेक मांड ॥३॥
तित पंचम उदधि तनों सु वार । सुर कर कर करि ल्याये उदार ॥
तव इन्द्र सहसकर करि अनंद । तुम सिर धारा ढारयौ सुनंद ॥४॥
अघ घघ घघ घघ धुनि होत घोर । भभ भभ भभ धध धध कलशशोर ॥
द्रमद्रम द्रमद्रम बाजत मृदंग । झन नन नन नन नन नूपुरंग ॥५॥
तन नन नन नन नन तनन तान । घन नन नन घंटा करत ध्वान ॥

ताथेई थेइ थेइ थेइ थेइ सुचाल । जुत नाचत नावत तुमहिं भाल॥६॥
चट चट चट अटपट नटत नाट । झट झट झट हट नट शट विराट॥
इमि नाचत राचत भगत रंग । सुर लेत जहां आनन्द संग ॥७॥
इत्यादि अतुल मंगल सुठाट । तित बन्यौ जहां सुरगिरि विराट ॥
पुनि करि नियोग पितु सदन आय । हरि सौंप्यौ तुम तित वृद्ध थाय ॥
पुनि राजमाहिं लहि चक्ररत्न । भोग्यौ छखगड करि धरम जत्न ॥
पुनि तप धरि केवलरिद्धिपाय । भवि जीवनकों शिवमग बताय ।६।
शिवपुर पहुँचे तुम हे जिनेश । गुनमंडित अतुल अनन्त भेष ॥
मैं ध्यावतु हों नित शीश नाय । हमरी भवबाधा हरि जिनाय ॥१०॥
सेवक अपनों निज जान जान । करुना करि भौभय भान भान ॥
यह विघन मूल तरु खगड खगड । चितचिंतित आनंद मंड मंड ॥११॥
घत्ता—श्रीशांति महंता, शिवतियकंता, सुगुन अनंता, भगवन्ता ॥

भवभ्रमन हनंता, सौख्य अनंता, दातारं तारनवन्ता ॥१॥

श्री ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छंद रूपक सवैया (मात्रा ३१) ।

शांतिनाथजिनके पदपंकज, जो भवि पूजे मनवचकाय ।
जनम जनमके पातक ताके, ततछिन तजिकैं जाय पलाय ॥
मनवांछित सुख पावै सो नर, वांचे भगतिभाव अति लाय ।
तातैं 'वृन्दावन' नित वंदै, जातैं शिवपुरराज कराय ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादः । परिपुष्पांजलिं क्षिपेत । इति श्रीशांतिनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ १६ ॥

श्रीकुंथुनाथ जिनपूजा ।

छन्द माधवी तथा किरीट (वर्ण २४) ।

अजअंक अजेपद राजे निशंक, हरे भवशंक निशंकित दाता ।
मतमत्त मतंगके माथें गँथे, मतवाले तिन्हें हनें ज्यौं हरिहाता ॥

गजनागपुरै लियो जन्म जिन्हौं रविके प्रभनन्दन श्रीमतिमाता।
सहकुंथुसुकुंथुनिके प्रतिपालक, थापों तिन्हें जुतभक्ति विख्याता ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर। संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

अष्टक—चाल लावनी मरहठी की लाला मनसुखरायजी कृत।

कुन्थु सुन अरज दासकेरी, नाथ सुनि अरज दासकेरी।
भवसिंधु परयो हों नाथ निकारो बांह पकर मेरी ॥
प्रभू सुन अरज दासकेरी। नाथ सुनि अरज दासकेरी।
जगजाल परयो हों बेग निकारो बांह पकर मेरी ॥ टेक ॥
सुरतरनीको उज्ज्वल जल भरि कनकभृंग भेरी।
मिथ्यातृषा निवारन कारन, धरों धार नेरी ॥ कुन्थु० ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बावन चन्दन कदलीनन्दन, घंसिकर गुन टेरी ।
तपत मोह नाशनके कारन, धरों चरन नेरी ॥ कुन्थु० ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुक्ताफलसमउज्ज्वल अच्छत, सहित मलय लेरी ।
पुंज धरों तुम चरणन आगें, अखय सुपद देरी ॥ कुन्थु० ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

कमल केतकी वेला दौना, सुमन सुमनसेरी ।
समर शूलनिरमूल हेतु प्रभु, भेंट करों तेरी ॥ कुन्थु० ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

घेवर बावर मोदन मोदक, मृदु उत्तम पेरी ।
तासों चरण जजों करुनानिधि, हरो छुधा मेरी ॥ कुन्थु० ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कंचन दीपगई वर दीपक, ललित जोति घेरी ।
सौ लै चरण जजों भ्रमतम रवि, निज सुबोध देरी ॥ कुन्थु० ॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
देवदारु हरि अगर तगर करि चूर अगनि खेरी ।
अष्ट करम ततकाल जरैं ज्यों धूम धनंजेरी ॥ कुन्थु० ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
लौंग लायची पिस्ता केला, कमरख शुचि लेरी ।
मोक्ष महाफल चाखन कारन, जजों सुकरि ढेरी ॥ कुन्थु० ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
जल चंदन तंदुल प्रसून चरु दीप धूप लेरी ।
फलजुत जजन करों मन सुख धरि, हरो जगत फेरी ॥ कुन्थु० ॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

[पंचकल्याणक अर्घ] मोतीदाम छन्द (वर्ण १२)।

सुसावनकी दशमी कलि जान । तज्यो सरवारथसिद्ध विमान ॥
भयो गरभागममंगल सार । जजैं हम श्रीपद अष्टप्रकार ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णादशमी गर्भमंगलमंडिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्व० ।

महा वयशाख सु एकम शुद्ध । भयो तब जन्म तिज्ञान समुद्ध ॥
कियो हरि मंगल मंदिरशीस । जजैं हम अत्र तुम्हें नुतशीस ॥२॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदि जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

तज्यो पटखंड विभौ जिनचंद । विमोहितचित्त चितारी सुछंद ॥
धरे तप एकम शुद्ध विशाख । सुमग्न भये निजआनंद चाख ॥३॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदि निःक्रमणमहोत्सवमंडिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि. ।

सुदी तिय चैत सु चेतन शक्त । चहूं अरि छै करि तादिन व्यक्त ॥
भई समवसृत भाखि सुधर्म । जजों पद ज्यों पद पाइय पर्म ॥४॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लातृतीयायां केवलज्ञानप्राप्तये श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

सुदी बयशाख सु एकम नाम । लियौ तिहिं द्यौस अभै शिवधाम ॥
जजे हरि हर्षित मंगल गाय । समर्चतु हौं सु हिया वचकाय ॥५॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदि मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

[जयमाला]

अरिल्ल छंद । (मात्रा २१ रूपालकार)

षट खंडन के शत्रु राजपदमें हने ।
धरि दीक्षा षटखंडन पाप तिन्हें दनें ।
त्यागि सुदरशन चक्र धरमचक्री भये ।
करमचक्र चकचूर सिद्ध दिढ गढ लये ॥१॥

ऐसे कुंथुजिनेशतनें पदपद्मकों ।
गुन अनन्त भंडार महासुखसद्मकों ॥
पूजों अरघ चढ़ाय पूरणानंद हो ।
चिदानंद अभिनंद इंदगनवंद हो ॥२॥

पद्धरी ।

जय जय जय जय श्रीकुंथुदेव । तुम ही ब्रह्मा हरि त्रिभुवेव ॥
जय बुद्धि विदांबर विष्णु ईश । जय रमाकांत शिवलोक शीश ॥३॥
जय दयाधुरंधर सृष्टिपाल । जय जय जगबंधू सुगुन माल ॥
सरवारथ सिद्धविमान छार । उपजे गजपुर में गुन अपार ॥४॥
सुरराज कियो गिरन्हौन जाय । आनन्द-सहित जुत-भक्ति भाय ॥
पुनि पिता सौंपि कर मुदित अंग । हरि तांडव-निरत कियो अभंग ॥
पुनि स्वर्ग गयो तुम इत दयाल । वय पाय मनोहर प्रजापाल ॥
षटखंडविभौ भोग्यौ समस्त । फिर त्याग जोग धारयो निरस्त ॥६॥
तब घाति घात केवल उपाय । उपदेश दियो सबहित जिनाय ॥
जाके जानत भ्रम-तम विलाय । सम्यकदरशन निरमल लहाय ॥७॥
तुम धन्य देव किरपा-निधान । अज्ञान-छपा-तमहरन भान ॥

जय स्वच्छगुनाकर शुक्तशुक्त । जय स्वच्छ सुखामृत भुक्तभुक्त ॥८॥
जय भौभयभंजन कृत्यकृत्य । मैं तुमरो हों निज भृत्य भृत्य ॥
प्रभु अशरन शरन अधार धार । मम विघ्नतूलगिरि जार जार ॥९॥
जय कुनय यामिनी सूर सूर । जय मनवंछित सुख पूर पूर ॥
मम करमबन्ध दिढ़ चूर चूर । निजसम आनँद दे भूर भूर ॥१०
अथवा जब लों शिव लहौं नाहिं । तब लों ये तो नित ही लहाहिं ॥
भव भव श्रावक-कुलजनमसार । भव भव सतमत सतसंग धार ॥११
भव भव निज आतम-तत्त्व-ज्ञान । भव भव तप संजम शील दान ॥
भवभव अनुभव नित चिदानंद । भवभव तुम आगम हे जिनंद ॥१२
भव भव समाधिजुत मरन सार । भवभव व्रत चाहों अनागार ॥
यह मोकों हे करुणानिधान । सब जोग मिलो आगम प्रमान ॥१३
जब लों शिव सम्पति लहों नाहिं । तबलों मैं इनको नित लहाँहिं ।

यह अरज हिये अवधारि नाथ । भवसंकट हरि कीजै सनाथ ॥१४॥

छंद घत्तानन्द (मात्रा ३१) ।

जय दीनदयाला, वरगुनमाला, विरदविशाला सुख आला ।
मैं पूजों ध्यावों, शीस नमावों, देहु अचल पदकी चाला ॥ १५॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्द रोडक (मात्रा २४)

कुन्थुजिनेशुरपाद पदम, जो प्रानी ध्यावैं ।
अलि समकर अनुराग, सहज सो निज निधि पावैं ॥
जो बांचै सरदहै, करै अनुमोदन पूजा,
"वृंदावन" तिह पुरुष सदृश, सुखिया नहिं दूजा ॥ १६ ॥

इत्याशीर्वादः । परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

इति श्री कुन्थनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ १७ ॥

श्रीअरनाथ जिनपूजा ।

छन्द (वीररस रूपलंकार मात्रा १५२) ।

तप तुरंग असवार धार तारन विवेक कर ।
ध्यान शुकल असिधार, शुद्ध सुविचार सुबखतर ॥
भावन सेना धरम, दशों सेनापति थापे ।
रतन तीन धर सकति, सकल मंत्री अनुभों निरमापे ॥
सत्तातल सोहं सुभट धुनि त्याग केतु शत अग्र धरि ।
इहविध समाज सज राजकों, अरजिन जीते करम अरि ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर, संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

[अष्टक] छंद त्रिभंगी । अनुप्रयासक । (मात्रा ३२ जगनवर्जित) ।

कनमनिमय झारी, दृगसुखकारी, सुरसरितारी नीरभरी ।
मुनिमनसम उज्ज्वल, जनमजरादल, सौ लै पदतल, धार करी ॥
प्रभु दीनदयालं अरिकुलकालं, विरदविशालं सुकुमालम् ।
हनि मम जंजालं, हे जगपालं, अरगुनमालं, वरभालम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा ।

भवताप नशावन, विरद सु पावन, सुनि मनभावन मोद भयो ।
तातैं घसि बावन, चंदन पावन, तरहिं चढ़ावन, उमगि अयो ॥प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि० स्वाहा ।

तंदुल अनियारे श्वेत संवारे, शशिदुति टारे, थार भरे ।
पद अखय सुदाता, जग विख्याता, लखि भवताता, पुंजधरे ॥प्रभु०॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरतरुके शोभित, सुरन मनोभित, सुमन अछोभित लै आयो ।
मनमथके छेदन, आप अवेदन, लखि निरवेदन, गुन गायो ॥प्रभु०॥
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नेवज सज भक्षक, प्रासुक अक्षक, पक्षकरक्षक, स्वच्छ धरी ।
तुम करमनिकक्षक भस्मकलक्षक दक्षक, पक्षक रक्षकरी ॥ प्रभु० ॥
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तुम भ्रमतमभंजन, मुनिमनकंजन, रंजन गंजनमोहनिशा ।
रविकेवलस्वामी, दीप जगामी, तुम ढिग आमी, पुन्यदशा ॥प्रभु०॥
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दशधूप सुरंगी गंधअभंगी वन्हिवरंगी मांहिं हवै ।
वसु कर्म जरावै धूमउड़ावै, तांडव भावै नृत्य पवै ॥ प्रभु० ॥
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

रितुफल अति पावन, नयनसुहावन, रसनाभावन, कर लीनें ।
तुम विघनविदारक, शिवफलकारक, भवदधि-तारक, चरचीनें ।।प्रभु०।।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुचि स्वच्छ पटीरं, गन्धगहीरं, तंदुल शीरं, पुष्पचरुं ।
वर दीपं धूपं, आनंदरूपं, लै फल भूपं, अर्घंकरं ।।प्रभु०।।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचकल्याणक अर्घ ।] छन्द चौपाई (मात्रा १६)

फागुन सुदी तीज सुखदाई । गरभ सुमंगल ता दिन पाई ॥
मित्रादेवी उदर सु आये । जजे इन्द्र हम पूजन आये ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लातृतीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

मंगसिर शुद्ध चतुर्दशि सोहै । गजपुर जनम भयो जग मोहै ॥
सुरगुरु जजें मेरुपर जाई । हम इत पूजैं मनवचकाई ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाचतुर्दश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्व. ।

मंगसिर सित चौदस दिन राजै । तादिन संजम धरै विराजे ॥
अपराजित घर भोजन पाई । हम पूजै इत चित हरषाई ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाचतुर्दश्यां निःक्रमणमहोत्सवमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

कातिक सित द्वादसि अरि चूरे । केवलज्ञान भयो गुन पूरे ॥
समवसरनथिति धरम बखाने । जजत चरन हम पातक भाने ॥४॥
ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वादश्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्व० ।

चैत शुकल ग्यारस सब कर्मं । नाशि वास किय शिव-थल पर्मं ॥
निहचल गुन अनन्त भन्डारी । जजों देव सुधि लेहु हमारी ॥५॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेंद्राय अर्घं नि. ।

[जयमाला]

[दोहा छंद । (जमक द तथा लाट नुवंधन]

बाहर भीतरके जिते, जाहर अति दुखदाय ।
ता हर कर अरजिन भये । साहर शिवपुर राय ॥ १ ॥

राय सुदरशन जासु पितु, मित्रादेवी माय ।
हेमवरन तन वरप वर, नव्वे सहस सुछाय ॥ २ ॥

छन्द तोटक (वर्ण १२)

जय श्रीधर श्रीकर श्रीपति जी । जय श्रीवर श्रीभर श्रीमति जी ॥
भवभीमभवोदधि तारन हैं । अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥३॥
गरभादिक मंगल सार धरे । जग जीवनिके दुखदन्द हरे ॥
कुरुवंशशिखामनि तारन हैं । अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥४॥
करि राज छखण्ड विभूतिमई । तप धारत केवलबोध ठई ॥
गण तीस जहां भ्रमवारन हैं । अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥५॥
भविजीवनिको उपदेश दियौ । शिवहेत सबै जन धारि लियौ ॥
जगके मव संकट टारन हैं । अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥६॥
कहि बीस प्ररूपनसार तहां । निजशर्मसुधारस धार जहां ॥

गति चार हषी पन धारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥७॥
षट काय तिजोग तिवेद मथा। पनवीस कथा वसु ज्ञान तथा ॥
सुर संजमभेद पसारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥ ८ ॥
रस दर्शन लेश्यय भव्य जुगं। खट सम्यक सैनिय भेद युगं ॥
जुग हार तथा सु अहारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥ ९ ॥
गुनथान चतुर्दश मारगना। उपयोग दुवादश भेद भना ॥
इमि बीस विभेद उचारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं॥ १२ ॥
इन आदि समस्त बखान कियौ। भवि जीवनने उरधार लियौ ॥
कितने शिववादि बधारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥ ११ ॥
फिर आप अघाति विनाश सबैं। शिवधाम विषैं थित कीन तबै ॥
कृतकृत्य प्रभू जगतारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥१२॥
अब दीनदयाल दया धरिये। मम कर्म कलंक सबै हरिये ॥

तुमरे गुनको कछु पार न हैं । अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥१३॥

घत्ता—जय श्रीअरदेवं, सुरकृतसेवं, समताभेवं, दातारं ।
अरिकर्मविदारन, शिवसुखकारण, जय जिनवर जगत्रातारं ॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

आर्या—अरजिनके पदसारं, जो पूजे द्रव्यभावसों प्रानी ।
सो पावें भवपारं, अजरामर मोक्षथान सुखखानी ॥१५॥

इत्याशीर्वाद । परिपुष्पांजलिं क्षिपेत । इति श्रीअरनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ १८ ॥

श्रीमल्लिनाथ जिनपूजा ।

छन्द रोडक—अपराजिततें आय नाथ मिथिलापुर जाये ।
कुंभराय के नन्द, प्रजापति मात बताये ॥
कनक वरन तन तुंग, धनुष पच्चीस विराजैं ।

सो प्रभु तिष्ठहु आय निकट मम ज्यों भ्रमभाजैं ॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर । संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अष्टक]

छन्द जोगीरासा (मात्रा २८)

सुर-सरिता-जल उज्ज्वल लै कर, मनि भृंगार भराई ।
जनम जरामृत नाशनकारन, जजहुँ चरण जिनराई ॥
राग-दोष-मद-मोहहरनको, तुम ही हो वरवीरा ।
यातें शरन गही जगपतिजी, बेग हरौ भवपीरा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

बावनचंदन कदलीनन्दन, कुंकुमसंग घसायौ ।
लेकर पूजौं चरणकमल प्रभु, भवआतापनशायौ ॥ राग० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तंदुलशशिसम उज्ज्वल लीने दीने पुंज सुहाई ।
नाचत राचत भगति करत ही, तुरित अखैपद पाई ॥ राग० ॥३॥
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पारिजात मंदार सुमन, संतानजनित महकाई ।
मार सुभट मदभंजनकारन, जजहु तुम्हें शिरनाई ॥ राग० ॥४॥
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

फेनी गोंझा मोदनमोदक, आदिक सद्य उपाई ।
सो लै क्षुधा निवारन कारन, जजहुँ चरन लवलाई ॥ राग० ॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तिमिरमोह उरमंदिर मेरे, छाय रह्यो दुखदाई !
तासु नाशकारनको दीपक, अद्भुतजोति जगाई ॥ राग० ॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अगर तगर कृष्णागर चंदन, चूरि सुगंध बनाई ।
अष्ट करम जारनको तुम ढिग, खेवतु हौं जिनराई ॥राग० ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल लौंग बदाम छुहारा, एला केला लाई ।
मोक्ष महाफलदान जानिकै, पूजौं मन हरखाई ॥ राग० ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल फल अरघ मिलाय गाय गुन, पूजों भगति बढ़ाई ।
शिवपदराज हेत हे श्रीधर, शरण गही मैं आई ॥राग०॥ ९
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

[पंच कल्याणक अर्घ]

लक्ष्मीधरा छंद (१२ वर्ण) ।

चैतकी शुद्ध एकैं भली राजई । गर्भकल्यान कल्यानकों साजई ॥
कुंभराजा प्रजापति माता तने । देवदेवी जजें शीस नाये घने ॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाप्रतिपदि गर्भमंगलमंडिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

मार्गशीर्ष सुदी ग्यारसी राजई । जन्मकल्यानको द्यौस सो छाजई ॥
इन्द्र नागेंद्र पूजैं गिरेंद्रे जिन्हें । मैं जजों ध्यायकें शीस नावों तिन्हें ॥
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

मार्गशीर्ष सुदी ग्यारसीके दिना । राजको त्याग दीक्षा धरी है जिना ॥
दान गोक्षीरको नंद्रसेनें दयो । मैं जजों जासुके पंचचर्जें भयो ॥
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां तपःमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

पौषकी श्यामदूती हने घातिया । केवलज्ञानसाम्राज्य लक्ष्मीलिया ॥
धर्मचक्री भये सेव शक्री करैं । मैं जजों चर्न ज्यों कर्मवक्री टरैं ॥
ॐ ह्रीं पौषकृष्णाद्वितीयायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

फाल्गुनी सेत पांचैं अघाती हते । सिद्ध आलै बसे जाय सम्मेदते ॥
इन्द्रनागेंद्र कीन्हीं क्रिया आयकें । मैं जजों सो मही ध्यायकें गायकें ॥
ॐ ह्रीं फाल्गुणशुक्लापंचम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

[जयमाला] [घत्तानन्द छन्द (मात्रा ३१) ।]

तुम नमित सुरेशा, नरनागेशा, रजतनगेशा, भगतिभरा ॥
भवभयहरनेशा, सुखभरनेशा, जै जै जै शिवरमनिवरा ॥१॥

पद्धरिछंद

जय शुद्ध चिदातम देव एव । निरदोष सुगुन यह सहज टेव ॥
जय भ्रमतमभंजन मारतंड । भविभवदधितारनकों तरंड ॥ २ ॥
जय गरभजनम-मंडित जिनेश । जय छायक समकित बुद्ध भेश ॥
चौथे किय सातों प्रकृति छीन । चौ अनंतानु मिथ्यात तीन ॥३॥
सातंय किय तीनों आयु नाश । फिर नवें अंश नवमें विलाश ॥
तिनमाहिं प्रकृत्त छत्तीस चूर । याभांति कियौ तुम ज्ञानपूर ॥४॥
पहिले महँ सोलह कहँ प्रजाल । निद्रानिद्रा प्रचलाप्रचाल ॥
हनि थानगृद्धिकों सकल कुव्व । नर तिर्यग्गति गत्यानुपुव्व ॥ ५ ॥
इक वे ते चौ इन्द्रीय जात । थावर आतप उद्योत घात ॥

सूक्षम साधारन एम चूर। पुनि दुतिय अंश वसु करयो दूर ॥६॥
चौ प्रत्याप्रत्याख्यान चार। तीजे सु नपुंसकवेद टार ॥
चौथे तियवेद विनाश कीन। पांचैं हास्यादिक छहों छीन ॥ ७ ॥
नरवेद छठें छय नियत धीर। सातयें संज्वलन क्रोध चीर ॥
आठवें संज्वलन मानभान। नवमें माया संज्वलनहान ॥ ८ ॥
इमि घात नवें दशमें पधार। संज्वलन लोभ तित हू विदार ॥
पुनि द्वादशकेद्वयअंशमांहि। सोरह चकचूर कियो जिनाहिं ॥६॥
निद्रा प्रचला इकभागमाहिं। दुति अंश चतुर्दश नाश जाहिं ॥
ज्ञानावरनी पन दरश चार। अरि अंतराय पांचों प्रहार ॥ १० ॥
इमि छय त्रेशठ केवल उपाय। धरमोपदेश दीन्हों जिनाय ॥
नवकेवललब्धि विराजमान। जय तेरमगुनथिति गुन अमान ॥११॥
गत चौदहमें द्वे भाग तत्र। छय कीन बहत्तर तेरहत्र ॥

वेदनी असाताको विनाश । औदारि विक्रियाहार नाश ॥१२॥
तैजस्यकारमानों मिलाय । तन पंचपंचबन्धनविलाय ॥
संघात पंच घाते महंत । त्रय आंगोपांग सहित भनंत ॥१३॥
संठान संहनन छह छहेव । रसवरन पंच वसु फरस भेव ॥
जुगगन्ध देवगति सहित पुव्व । पुनि अगुरु लघू उस्वास दुव्व ॥१४॥
परउपघातक सुविहाय नाम । जुत अशुभगमन प्रत्येक खाम ॥
अपरज थिर अथिर अशुभसुमेव । दरभाग सुसुर दुस्सुर अमेव ॥१५॥
अनअदार और अजस्य कित्त । निरमान नीच गोतौ विचित्त ॥
ये प्रथम बहत्तर दिय खपाय । तब दूजेमें तेरह नशाय ॥ १६ ॥
पहले सातावेदनी जाय । नरआयु मनुषगतिको नशाय ॥
मानुषगत्यानु सु पूरवीय । पन्चेन्द्रिय जात प्रकृती विधीय ॥१७॥
त्रसवादर परजापति सुभाग । आदरजुत उत्तम गोतपाग ॥
जस कीरत तीरथ प्रकृत जुक्त । ए तेरह चय करि भये मुक्त ॥१८॥

जय गुन अनन्त अविकार धार। वरनत गनधर नहिं लहत पार ॥
ताकों मैं वन्दौं बारबार। मेरी आपद उद्धार धार ॥१६॥
सम्मेदशैल सुरपति नमन्त। तव मुकतथान अनुपम लसन्त।
'वृन्दावन' वन्दत प्रीतलाय। मम उरमें तिष्ठहु हे जिनाय ॥२०॥
घत्ता—जय जय जिन स्वामी, त्रिभुवन नामी, मल्लि विमलकल्यान करा॥
भवद्वन्दविदारन आनंदकारन, भविकुमोदनिशिईश वरा॥२१॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखरिणी—जजे हैं जो प्रानी दरब अरु भावादि विधिसों।
करै नानाभांती भगति थुति औ नौति सुधिसों ॥
लहै शक्री चक्री सकल सुख सौभाग्य तिनको।
तथा मोक्षं जावै जजत जन जो मल्लिजिनको ॥२२॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्। इति श्रीमल्लिनाथजिनपूजा समाप्ता ॥१६॥

श्रीमुनिसुव्रत जिनपूजा ।

मत्तगयन्द

प्रानत स्वर्ग विहाय लियो जिन, जन्म सुराजगृहीमहँ आई ।
श्रीसुहमित्र पिता जिनके गुनवान महापवमा जसु माई ॥
बीस धनू तनु श्याम छवी, कुछ अंक हरी वरवंश बताई ।
सो मुनिसुव्रतनाथ प्रभू कहँ, थापतु हों इत प्रीति लगाई ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर, संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

[अष्टक] [गीतिका]

उज्ज्वल सुजल जिमि जस तिहारो, कनक झारीमें भरों ।
जरमरन जामन हरन कारन, धार तुमपदतर करों ॥

शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ, मुनिगुन माल है ।
तसु चरन आनन्द भरन तारन, तरन विरद विशाल है ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा ।

भवतापघायक शांतिदायक, मलय हरि घसि ढिग धरों ।
गुनगाय शीस नमाय पूजत, विघनताप सबैं हरों ॥शिव०॥२॥
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि० स्वाहा ।

तुन्दुल अखण्डित दमक शशिसम, गमक जुत थारी भरों ।
पद अखयदायक मुकतिनायक, जानिपद पूजा करों ॥शि०॥३॥
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

बेला चमेली रायबेली, केतकी करना सरों ।
जगजीत मनमथहरन लखि प्रभु, तुम निकट ढेरी करों ॥शि०॥४॥
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

पकवान विविध मनोज्ञ पावन, सरस मृदुगुन विस्तरों।
सो लेय तुम पद तर धरत ही, क्षुधा डाइनको हरों ॥शि०॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक अमोलिक रतन मनिमय, तथा पावनघृत भरों।
सो तिमिरमोहविनाश आतमभास कारन ज्वै धरों ॥शि०॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

करपूर चन्दन चूरभूर, सुगन्ध पावकमें धरों।
तसु जरत जरत समस्त पातक, सार निजसुखकों भरों ॥शि०॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल अनार सु आम आदिक, पक्वफल अति विस्तरों।
सो मोक्षफलके हेतु लेकर, तुम चरन आगे धरों ॥शि०॥८॥
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलगन्ध आदि मिलाय आठों, दरब अरघ सजों वरों ।
पूजों चरणरज भक्तिजुत जातें जगत सागर तरों ॥ शि० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

[पंचकल्याणक अर्घ] [तोटक]

तिथि दोयज सावन श्याम भयो । गरभागममंगल मोद थयो ॥
हरिवृन्द सची पितुमात जजे । हम पूजत ज्यौं अघओघ भजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घं निर्व० ।

वयसाख वदी दशमी वरनी । जनमे तिहिं द्यौस त्रिलोकधनी ॥
सुरमंदिर ध्याय पुरन्दरने । मुनिसुव्रतनाथ हमें शरने ॥२॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णादशम्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घं निर्व. ।

तप दुद्धर श्रीधरने गहियो । वयसाख वदी दशमी कहियो ॥
निरुपाधि समाधि सुध्यावत हैं । हम पूजत भक्ति बढ़ावत हैं ॥३॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णादशम्यां तपमंगलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

वरकेवलज्ञान उद्योत किया । नवमी वयसाखवदी सुखिया ॥
घनि मोहनिशाभनि मोखमगा । हम पूजि चहैं भवसिंधु थगा ॥४॥
ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णानवम्यां केवलज्ञानमंगलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०
वदि बारस फागुन मोच्छ गये । तिहुं लोक शिरोमनि सिद्ध भये ॥
सु अनन्त गुनाकर विघन हरी । हम पूजत हैं मनमोद भरी ॥५॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाद्वादश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

[जयमाला]

[दोहा]

गुनिगननायक मुक्तिपति, सूक्तव्रताकर युक्त ।
भुक्तमुक्त दातार लखि, वन्दों तनमनउक्त ॥ १ ॥

तोटक-जय केवलभान अमान धरं । मुनिस्वच्छसरोज विकासकरं ॥
भवसंकट भंजनलायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥२॥
घनघातव नन्दवदीप्त भनं । भविबोधतृषातुरमेघघनं ॥
नितमंगलवृंद वधायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥३॥

गरभादिक मंगलसार धरे। जगजीवन के दुखद्वन्द हरे ॥
सब तत्त्वप्रकाशन वायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥४॥
शिवमारगमण्डन तत्त्वकह्यो। गुनसार जगत्रय शर्म लह्यो ॥
रुज रागरु दोष मिटायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥५॥
समवस्रतमें सुरनार सही। गुन गावत नावत भालमही ॥
अरु नाचत भक्ति बढ़ायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥६॥
पगनूपुरकी धुनि होत भनं। झननं झननं झननं झननं।
सुरलेत अनेक रमायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥७॥
घननं घननं घन घंट बजैं। तननं तननं तनतान सजैं ॥
द्रिमद्रिम मिरदंग बजायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥८॥
छिनमेंलघु औ छिनथूल बनें। जुत हावविभाव विलासपनें ॥
मुखतें पुनि यों गुनगायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥९॥

धृगता धृगता पगपावत हैं। सननं सननं सु नचावत हैं ॥
अति आनन्दको पुनि पायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥१०॥
अपने भवको फल लेत सही। शुभ भावनितें सब पाप दही ॥
तित ते सुखको सब पायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥११॥
इन आदि समाज अनेक तहाँ। कहि कौन सकै जु विभेद यहाँ ॥
धन श्रीजिनचन्द सुधायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥१२॥
पुनि देशविहार कियो जिनने। वृष अमृतवृष्टि कियो तुमने ॥
हमको तुमरी शरणायक है। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥१३॥
हमपै करुणा करि देव अबैं। शिवराज समाज सुदेहु सबैं ॥
जिमि होहुँ सुखाश्रमनायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥१४॥
भवि वृन्दतनी विनती जु यही। मुझ देहु अखेपद राज सही ॥
हम आनि गही शरणायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥ १५ ॥

घत्ता—जय गुणगणधारी, शिवहितकारी, शुद्धबुद्ध चिद्रूपपती ।
परमानंददायक, दाससहायक, मुनिसुव्रत जयवन्त जती ॥१६॥
श्री ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा—श्रीमुनिसुव्रत के चरण, जो पूजै अभिनन्द ।
सो सुरनर सुख भोगिकें, पावै सहजानंद ॥ १७ ॥

इत्याशीर्वाद । परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् । इति श्रीमुनिसुव्रजिनपूजा समाप्ता ॥ २० ॥

श्रीनमिनाथ जिनपूजा ।

रोडक—श्रीनमिनाथजिनेंद्र नमों विजयारथनन्दन ।
विख्यादेवी मातु सहज सब पापनिकन्दन ॥
अपराजित तजि जये मिथुलपुर वर आनन्दन ।
तिन्हें सु थापों यहां त्रिधाकरिके पदबन्दन ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अष्टक]

[द्रुतविलम्बित]

सुरनदीजल उज्ज्वल पावनं । कनक भृङ्गभरों मनभावनं ॥
जजतु हैं नमिके गुनगायकें । जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिमलै मिलि केशरसों घसों । जगतनाथ भवातपको नसों ॥
जजतुहौं नमिके गुनगायकें । जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

गुलकके सम सुन्दर तंदुलं । धरत पुंजसु भुंजत संकुलं ॥
जजतु हौं नमिके गुनगायकें । जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

कमल केतुकि वेलि सुहावनी । समरसूल समस्त नशावनी ॥
जजतु हों नमिके गुनगायकें । जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

शशि सुधासम मोदक मोदनं । प्रबल दुष्ट क्षुधामद खोदनं ॥
जजतु हौं नमि के गुनगायकें । सुगपदांबुज प्रीति लगायकें ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुचि घृताश्रित दीपक जोइया । असममोह महातम खोइया ।
जजतु हौं नमिके गुनगायकें । जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अमरजिह्वविषें दशगंधको । दहत दाहत कर्म कबंधकों ॥
जजतु हौं नमिके गुनगायकें । जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फलसुपक्क मनोहर पावने । सकल विघ्नसममूह नशावने ॥
जजतु हौं नमिके गुनगायकें । जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जलफलादि मिलाय मनोहरं । अरघ धारत ही भय भौ हरं ॥
जजतु हौं नमिके गुनगायकें । जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

[पंच कल्याणक अर्घ]

[पाइत्ता छंद]

गरभागम मंगलधारा । जुग आश्विन श्याम उदारा ॥
हरिहर्षि जजे पितुमाता । हम पूजें त्रिभुवन–ताता ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णाद्वितीयायां गर्भावतरणमंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।
जनमोत्सव श्याम अषाढ़ा । दशमीदिन आनंद बाढ़ा ॥
हरि मन्दर पूजे जाई । हम पूजें मनवचकाई ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं आषाढकृष्णादशम्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व० ।
तप दुद्धर श्रीधर धारा । दशमीकलि षाढ़ उदारा ॥
निज आतमरसभर लायौ । हम पूजत आनंद पायौ ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं आषाढकृष्णादशम्यां तपःमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

सित मंगसिरग्यारस चूरे । चवघाति भये गुनपूरे ॥
समवसृत केवलधारी । तुमकों नित नौति हमारी ॥४॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

वैशाख चतुर्दशि श्यामा । हनि शेष वरी शिववामा ॥
सम्मेदथकी भगवंता । हम पूजैं सुगुन अनन्ता ॥५॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

जयमाला ।

दोहा—आयु सहस दश वर्ष की, हेमवरन तनसार ।
धनुष पंचदश तुंग तन, महिमा अपरम्पार ॥ १ ॥

चौपाई—जै जै जै नमिनाथ कृपाला । अरिकुलगहनदहनदवज्वाला ।
जै जै धरमपयोधर धीरा । जय भवभंजन गुनगंभीरा ॥२॥
जै जै परमानंद गुनधारी । विश्वविलोकन जन हितकारी ॥
अशरन शरन उदार जिनेशा । जै जै समवशरन आवेशा ॥३॥

जै जै केवलज्ञान प्रकाशी । जै चतुरानन हनि भवफाँसी ॥
जै त्रिभुवनहित उद्यमवन्ता । जै जै जै जै नमि भगवंता ॥४॥
जै तुम सप्ततत्त्व दरशायो । तासु सुनत भविनिजरस पायो ॥
एक शुद्धअनुभवनिज भाखे । दोविधि राग दोष क्षय आखे ॥५॥
द्वै श्रेणी द्वै नय द्वै धर्मं । दो प्रमाण आगमगुन शर्मं ॥
तीनलोक त्रयजोग त्रिकालं । सल्ल पल्ल त्रय बात बलालं ॥६॥
चार बंध संज्ञागति ध्यानं । आराधन निक्षेप चउ दानं ॥
पंचलब्धि आचार प्रमादं । बंधहेतु पैताले सादं ॥ ७ ॥
गोलक पंचभाव शिव भौनें । छहों दरब सम्यक अनुकौनें ॥
हानिवृद्धि तप समय समेता । सप्तभंगवानीके नेता ॥ ८ ॥
संजम समुदघात भय सारा । आठ करम मद सिध गुनधारा ॥
नवों लब्धि नवतत्त्वप्रकाशे । नोकषाय हरि तूप हुलाशे ॥ ९ ॥

दशों वन्धके मूल नशाये । यों इन आदि सकल दरशाये ॥
फेर विहरि जगजन उद्धारे । जै जै ज्ञान दरश अविकारे ॥१०॥
जै वीरज जै सूच्छमवन्ता । जै अवगाहन गुन वरनन्ता ॥
जै जै अगुरुलघू निरवाधा । इन गुनजुत तुम शिवसुख साधा ॥११
ताकों कहत थके गनधारी । तौ को समरथ कहै प्रचारी ॥
तातें मैं अब शरनैं आया । भवदुख मेटि देहु शिवराया ॥१२॥
वारवार यह अरज हमारी । हे त्रिपुरारी हे शिवकारी ॥
परपरनतिको वेगि मिटावो । सहजानन्द सरूपभिटावो ॥ १३ ॥
"वृंदावन" जांचत शिरनाई । तुम मम उर निवसौ जिनराई ॥
जवलों शिव नहिं पावों सारा । तबलों यही मनोरथ म्हारा ॥१४॥

घत्ता—जयजय नमिनाथं, हो शिवसाथं, औ अनाथके नाथ सदं ।
तातें शिरनायौ, भगति बढ़ायौ, चिह्न चिह्न शतपत्र पदं ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा—श्री नमिनाथतनैं जुगल, चरन जजैं जो जीव ।
सो सुरनरसुख भोगवर, होवैं शिवतिय पीव ॥१६॥

इत्याशीर्वादः । परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् । इति श्रीनमिनाथजिनपूजा समाप्ता ॥२१॥

श्रीनेमिनाथ जिनपूजा ।

छन्द लक्ष्मी, तथा अर्द्ध लक्ष्मीधरा ।

जैति जै जैति जै जैति जै नेमकी, धर्म औतार दातार श्यौचैनकी ।
श्रीशिवानंद भौफन्द निःकन्द की, ध्यावैं जिन्हें इन्द्र नागेन्द्र औ मैनकी
परमकल्याण के देनहारे तुम्हीं, देव हो एव तातें करौं ऐनकी ।
थापि हों वार त्रै शुद्ध उच्चार त्रै, शुद्धताधार भौपारकूं लेनकी ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

[अष्टक] [चाल होली, ताल जत्त]

दाता मोक्षके श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता० ॥ टेक ॥
निगमनदी कुश प्राशुक लीनौ, कञ्चनभृंग भराय ॥
मनवचतनतैं धार देत ही, सकल कलंक नशाय ।
दाता मोक्षके, श्रीनेमिनाथ जिनराय ॥ दाता० ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा ।

हरिचन्दनजुत कदलीनन्दन, कुंकुमसंग घसाय ।
विघनतापनाशनके कारन, जजौं तिहारे पाय ॥ दाता०॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि० स्वाहा ।

पुण्यराशि तुमजस सम उज्ज्वल, तंदुल शुद्ध मंगाय ।
अखय सौख्य भोगन के कारन, पुंज धरों गुनगाय ॥दा०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुण्डरीकतृणद्रुमको आदिक, सुमन सुगंधितलाय ।

दर्पकमनमथभंजनकारन, जजहुँ चरण लवलाय ॥दा०॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

घेवर बावर खाजे साजे, ताजे तुरित मंगाय ।
छुधावेदनी नाश करनको, जजहुँ चरण उमगाय ॥दा०॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय छुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कनकदीपनवनीत पूरकर उज्ज्वल जोति जगाय ।
तिमिरमोहनाशक तुमकों लखि, जजहुँ चरण हुलसाय ॥द०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दशविध गन्ध बनाय मनोहर, गुञ्जत अलिगन आय ।
दशोंबन्ध जारनके कारन, खेवों तुगढिग लाय ॥दा०॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरसवरन रसनामनभावन, पावन फल सु मंगाय ।
मोक्षमहाफलकारण पूजों, हे जिनवर तुम पाय ॥ दाता० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जलफलआदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय ।
अष्टमछितिके राज करनकों, जजों अंग वसुनाय ॥ दाता० ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच कल्याणक अर्घ ।

सित कातिक छट्ट अमन्दा । गरभागमआनंदकन्दा ॥
शचि सेय सिवापद आई । हम पूजतमनवचकाई ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाषष्ठ्यां गर्भावतरणमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

सित सावन छट्ट अमन्दा । जनमें त्रिभुवन के चन्दा ॥
पितु समुद महासुख पायो । हम पूजत विघन नशायो ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

तजि राजमती व्रतलीनों । सितसावन छट्ट प्रवीनों ॥
शिवनारि तबै हरपाई । हम पूजैं पद शिरनाई ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाषष्ठ्यां तपःमंगलमंडिताय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

सित आश्विन एकम चूरे । चारों घाती अति क्रूरे ॥
लहि केवल महिमा सारा । हम पूजैं अष्टप्रकारा ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाप्रतिपदि केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

सितषाढ अष्टमी चूरे । चारों अघातिया क्रूरे ॥
शिव उज्जयंततें पाई । हम पूजैं ध्यान लगाई ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं आषाढशुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

जयमाला ।

श्याम छवी तन चाप दश, उन्नत गुननिधिधाम ।
शंख चिह्नपदमें निरखि, पुनि पुनि करों प्रणाम ॥ १ ॥

पद्धरी—जै जै जै नेमि जिनिंद चन्द । पितु समुद देन आनंदकन्द ॥
शिवमात कुमुदमनमोददाय । भविवृन्द चकोर सुखी कराय ॥२॥
जय देव अपूरव मारतंड । तुम कीन ब्रह्मसुत सहस खंड ॥

शिवतियमुखजलजविकाशनेश । नहिं रह्यौ सृष्टि में तम अशेष ॥३॥
भविभीत कोक कीनों अशोक । शिवमग दरशायो शर्मथोक ॥
जै जै जै जै तुम गुणगंभीर । तुम आगम निपुण पुनीत धीर ॥४॥
तुम केवलजोति विराजमान । जै जै जै जै करुणानिधान ॥
तुम समवसरणमें तत्त्वभेद । दरशायो जातें नशत खेद ॥५॥
तित तुमकों हरि आनंदधार । पूजतभक्तीजुत बहु प्रकार ॥
पुनि गद्यपद्यमय सुजस गाय । जै बल अनन्त गुनवंतराय ॥६॥
जय शिवशंकर ब्रह्मा महेश । जय बुद्ध विधाता विष्णुवेष ॥
जय कुमतिमतंगनको मृगेंद्र । जय मदनध्वांतको रवि जिनेंद्र ॥७॥
जय कृपासिंधु अविरुद्ध बुद्ध । जय रिद्धसिद्ध दाता प्रबुद्ध ॥
जय जगजनमनरंजन महान । जय भवसागरमहँ सुष्टु यान ॥८॥
तुव भगति करैं ते धन्य जीव । ते पावैं दिव शिवपद सदीव ॥

तुमरो गुन देव विविधप्रकार । गावत नित किन्नर की जु नार ॥९॥
वर भगतिमाहिं लवलीन होय । नाचैं ताथेइ थेइ थेइ बहोय ॥
तुम करुणासागर सृष्टिपाल । अब मोकों वेगि करो निहाल ॥१०॥
मैं दुख अनंत वसुकरमजोग । भोगे सदीव नहिं और रोग ॥
तुमको जगमें जान्यों दयाल । हो वीतराग गुनरतनमाल ॥ ११ ॥
तातें शरणा अब गही आय । प्रभु करो वेगि मेरी सहाय ॥
यह विघन करम मम खंडखंड । मनवांछितकारज मंडमंड ॥१२॥
संसारकष्ट चकचूर चूर । सहजानंद मम उर पूर पूर ॥
निज पर प्रकाशबुधि देह देह । तजिके विलंब सुधि लेह लेह ॥१३॥
हम जांचत हैं यह वार वार । भवसागरतें मो तार तार ॥
नहिं सह्यो जात यह जगत दुःख । तातें विनवों हे सुगुनमुक्ख ॥१४॥
घत्ता—श्रीनेमिकुमारं जितमदमारं, शीलागारं, सुखकारं ।

भवभयहरतारं शिवकरतारं, दातारं धर्माधारं ।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मालिनी—सुख धनयशसिद्धी पुत्रपौत्रादि वृद्धी ।
सकल मनसि सिद्धी होतु है ताहि ऋद्धी ।
जजत हरषधारी नेमिको जो अगारी ।
अनुक्रम अरि जारी सो वरे मोक्ष नारी ॥ १६ ॥

इत्याशीर्वादः, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् । इति श्रीनेमिनाथजिनपूजा समाप्ता ॥२२॥

श्रीपार्श्वनाथ जिनपूजा ।

कवित्त छन्द (मात्रा ३१) ।

प्राणतदेवलोकतें आये, वामादे उर जगदाधार ।
अश्वसेन सुतनुत हरिहर हरि, अंक हरिततन सुखदातार ॥
जरतनाग जुगबोधि दियो जिहिं, भुवनेसुरपद परमउदार ।
ऐसे पारस को तजि आरस, थापि सुधारस हेत विचार ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर, संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

प्रमिताक्षर ।

सुरदीरघकंचनकुम्भ भरौं । तव पादपद्मतर धार करौं ॥
सुखदाय पाय यह सेवत हौं । प्रभुपार्श्व सार्श्व गुण बेवत हौं ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगन्ध कुंकुम कपूर घसौं । हरि चिह्न हेरि अरचौं सुरसौं ॥सु०॥२

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

हिमहीरनीरजसमानशुचं । वरपुञ्ज तंदुल तवाग्र मुचं ॥ सु० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

कमलादिपुष्प धनुपुष्प धरी । मदभञ्जहेत ढिग पुञ्ज करी ॥सु० ॥४

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

चरु नव्यगव्य रससार करों। धरि पादपद्मतर मोद भरों ॥सु०॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनिदीपजोत जगमग्ग मई। तव पादकंज तर वार दई ॥सु०॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध खेय मन माचत है। बहु धूमधूममिसि नाचत है ॥सु०॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलपक शुद्ध रस जुक्त लिया। पदकंज पूजत हैं खोलि हिया॥सु०८॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलआदि साजि सब द्रव्य लिया। कनथार धार नुतनृत्य किया ॥सु०९॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

[पंच कल्याणक अर्घ]

[तोटक]

पक्ष वैशाखकी श्याम दुतिया भनों। गर्भकल्याणको द्यौस सोही गनों॥
देवदेवेन्द्र श्रीमातु सेवैं सदा। मैं जजों नित्य ज्यों विघ्न होवै विदा॥
ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्व०।

पौषकी श्याम एकादशीकों स्वजी । जन्म लीनों जगन्नाथ धर्मध्वजी ॥
नाग नागेन्द्र नागेन्द्र पैं पूजिया । मैं जजों ध्यायकें भक्ति धारों हिया ॥
ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादशम्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्व. ।

कृष्णएकादशी पौषकी पावनी । राजकों त्याग वैराग धारयो वनी ॥
ध्यानचिद्रूपको ध्याय साता मई । आपको मैं जजों भक्ति भावें लई ॥
ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादशम्यां तपमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

चैत की चौथि श्यामा महाभावनी । तादिना घातिया घाति शोभावनी ॥
बाह्य आभ्यन्तरें छन्द लक्ष्मीधरा । जैति सर्वज्ञ मैं पादसेवा करा ॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां केवलमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

सप्तमीशुद्ध शोभै महासावनी । तादि मोक्षपायो महापावनी ॥
शैलसम्मेदतें सिद्धराजा भये । आपकों पूजते सिद्धकाजा ठये ॥
ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णानवम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

[जयमाला] दोहा (जमकालंकार)

पाशपर्म गुनराश हैं, पाशकर्म हरतार ।
पाशशर्म निजवास द्यो, पाशधर्म धरतार ॥ १ ॥
नगरवनारसि जन्मलिय, वंश इक्ष्वाक महान ।
आयु वरप शततुङ्ग तन, हस्त सुनौ परमान ॥ २ ॥

पद्धरी–जय श्रीधर श्रीकर श्रीजिनेश । तुव गुन गन फणिगावत अशेश ॥
जय जय जय आनंदकन्द चन्द । जय जय भविपङ्कजको दिनन्द ॥३॥
जय जय शिवतियवल्लभ महेश । तुव ब्रह्मा शिवशंकरगनेश ॥
जय स्वच्छचिदङ्ग अनङ्गजीत । तव ध्यावत मुनिगन सुहृदमीत ॥४॥
जय गरभागममंडित महंत । जगजनमनमोदन परम संत ॥
जय जनममहोत्सव सुखदधार । भविसारंगको जलधर उदार ॥५॥
हरिगिरिवरपर अभिपेक कीन । झट तांडव निरत अरंभदीन ॥
वाजन वाजत अनहद अपार । को पार लहत वरनत अवार ॥६॥

दृमदृम दृमदृम दृमदृम मृदंग। घननन नननन घंटा अभंग ॥
छमछम छमछम छम छुद्रघंट। टमटम टमटम टंकोर तंट ॥ ७ ॥
झननन झननन नूपुर झंकोर। तननन तननन नन तानशोर ॥
सनननन नननननन गगनमाहिं। फिरिफिरिफिरिफिरिफिरिकी लहांहिं ॥
ताथेइ थेइ थेइ थेइ धरत पाव। चटपट अटपट झट त्रिदशराव ॥
करिकें सहस्र करको पसार। बहुभांति दिखावत भाव प्यार ॥९॥
निजभक्ति प्रगटजित करत इन्द्र। ताकों क्या कहिं सकि हैं कविंद्र ॥
जहँ रंगभूमि गिरिराज पर्म। अरु सभा ईश तुम देश शर्म ॥१०॥
अरु नाचत मघवा भक्तिरूप। बाजे किन्नर बज्जत अनूप ॥
सो देखत ही छवि बनत वृन्द। मुखसौं कैसे बरनै अमंद ॥११॥
धनघड़ी सोय धन देव आप। धन तीर्थंकर प्रकृती प्रताप ॥
हम तुमको देखत नयनद्वार। मनु आज भये भवसिंधु पार ॥१२॥

पुनिपिता सौंपि हरि स्वर्गजाय । तुम सुख समाज भोग्यौ जिनाय ॥
फिर तपधरि केवल ज्ञान पाय । धरमोपदेश दे शिवसिधाय ॥१३॥
हम शरणागत आये अबार । हे कृपासिंधु गुन अमलधार ॥
मो मनमें तिष्ठहु सदाकाल । जबलौं न लहों शिवपुर रसाल ॥१४
निरवान थान सम्मेद जाय । 'वृन्दावन' बंदत शीशनाय ॥
तुम ही हौ सब दुखद्वन्द हर्न । तातें पकरी यह चर्ण शर्ण ॥१५॥

घत्ता—जय जय सुखसागर, त्रिभुवन आगर, सुजस उजागर पार्श्वपती ॥
"वृन्दावन" ध्यावत, पूजरचावत, शिवथल पावत, शर्म अती ॥१६॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पारसनाथ अनाथनिके हित, दारिदगिरिकों वज्रसमान ।
सुखसागरवर्द्धनको शशिसम, दवकषायको मेघमहान ॥
तिनकों पूजैं जो भविप्राणी, पाठ पढैं अति आनंद आन ।

सो पावै मनवांछित सुख सब, और लहै अनुक्रमनिरवान ॥१७॥

इत्याशीर्वाद (पुष्पांजलिं क्षिपेत्) इति श्रीपार्श्वनाथ जिनपूजा समाप्ता ॥ २३ ॥

श्रीवर्द्धमान जिनपूजा ।

मत्तगयन्द ।

श्रीमतवीर हरै भवपीर, भरै सुखसीर अनाकुलताई ।
केहरिअंक अरीकरदंक, नये हरिपंकतिमौलि सुआई ॥
मैं तुमको इत थापतु हौं प्रभु, भक्ति समेत हिये हरषाई ।
हे करुणाधनधारक देव, इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अष्टक—क्षीरोदधिसम शुचि नीर, कंचन भृंग भरों ।
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातैं धार करों ॥

श्री वीरमहा अतिवीर सन्मतिनायक हो ।
जय वर्द्धमान गुणधीर सन्मति दायक हो ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलयागिर चन्दन सार, केसरसंग घसौं ।
प्रभु भव आताप निवार, पूजत हिय हुलसौं ॥ श्री० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तंदुलसित शशिसम शुद्ध, लीनों थार भरी ।
तसु पुंज धरों अविरुद्ध, पावों शिवनगरी ॥श्री. ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरतरु के सुमन समेत सुमन सुमनप्यारे ।
सो मनमथभंजनहेत, पूजों पद थारे ॥ श्री. ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

रसरज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी ।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी ॥श्री० ॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
तमखण्डित मण्डितनेह, दीपक जोवत हों ।
तुम पदतर हे सुखगेह, भ्रमतम खोवत हों ॥श्री० ॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
हरिचन्दन अगर कपूर, चूर सुगन्ध करा ।
तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा ॥ श्री० ॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
रितुफल कलवर्जित लाय, कंचनथार भरा ॥
शिव फलहित हे जिनराय, तुमढिग भेंट धरा ॥ श्री० ॥८॥
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
जलफल वसु सजि हिमथार, तनमनमोद धरों ।

गुण गाऊँ भवदधि तार, पूजत पाप हरों ॥ श्री० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच कल्याणक अर्घं ।

मोह राखो हो, शरणा, श्रीवर्द्धमान जिनरायजी, मोहि राखो० ॥

गरभ साढ़मित छट्ट लियो थिति, त्रिशला उर अघ हरना ।

सुर सुरपति तित सेव करयो नित, मैं पूजों भवतरना ॥मोहि०॥१॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठ्यां गर्भावतरणमंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

जनम चैतसित तेरसके दिन, कुंडलपुर कनवरना ।

सुरगिर सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजों भवहरना ॥ मोहि० ॥२॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाषष्ठ्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

मंगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना ।

नृप कुमारघर पारन कीनों, मैं पूजों तुम चरना ॥ मोहि० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

शुकलदशैं वैशाखदिवस अरि, घात चतुक क्षयकरना ।
केवललहि भवि भवसरतारे, जजों चरण सुख भरना ॥मोह० ॥४॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

कातिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुरतें परना ।
गनफनिवृन्द जजे तित बहुविधि, मैं पूजों भयहरना ॥ मो० ॥५॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

[जयमाला] [छन्द हरिगीता २८ मात्रा]

गनधर असनिधर, चक्रधर, हरधर, गदाधर वरवदा ।
अरु चापधर विद्यासुधर, तिरसूलधर सेवहिं सदा ॥
दुखहरन आनन्दभरन तारन, तरन चरन रसाल हैं ।
सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत, भालकी जयमाल है ॥ १ ॥

घत्ता—जय त्रिशलानन्दन हरिकृतवंदन जगदानन्दन, चन्दवरं ।
भवतापनिकन्दन, तनकनमंदन, रहितसपंदन, नयनधरं ॥२॥

तोटक।

जय केवलभानु कलासदनं। भविकोकविकासन कंजवनं॥
जगजीत महारिपु मोहहरं। रजज्ञानदृगांवर चूरकरं॥ १॥
गर्भादिक मंगलमंडित हो। दुख दारिदको नित खंडित हो॥
जगमाहिं तुम्हीं सत पंडित हो। तुम ही भवभावविहंडित हो॥२॥
हरिवंशसरोजनको रवि हो। बलवंत महंत तुम्ही कवि हो॥
लहि केवल धर्मप्रकाश कियौ। अबलों सोइ मारग राजति यौं॥३॥
पुनि आप तने गुनमाहिं सही। सुर मग्न रहैं जितने सब ही॥
तिनकी वनिता गुन गावत हैं। लय माननिसों मनभावत हैं॥४॥
पुनि नाचत रंग उमंग भरी। तुव भक्ति विषै पग येम धरी॥
झननं झननं झननं झननं। सुरलेत तहां तननं तननं॥ ५॥
घननं घननं घनघंट बजै। दृमदृं दृमदृं मिरदंग सजै॥
गगनांगनगर्भगता सुगता। ततता ततता अतता वितता॥६॥

धृगतां धृगतां गति बाजत है । सुरताल रसालजु छाजत है ।
सननं सननं सननं नभमें । इकरूप अनेक जु धारि भमें ॥७॥
केइ नारिसु वीन बजावति हैं । तुमरो जस उज्ज्वल गावति हैं ॥
करतालविषैं करताल धरें । सुरताल विशाल जु नाद करें ॥८॥
इन आदि अनेक उछाहभरी । सुरभक्ति करैं प्रभुजी तुमरी ॥
तुमही जगजीवनिके पितु हो । तुमही विनकारनतें हितु हो ॥
तुमही सब विघनविनाशन हो । तुमही निज आनंद भासन हो ॥
तुमही चितचिंतितदायक हो । जगमाहिं तुम्हीं सब लायक हो ॥
तुमरे पनमंगलमाहिं सही । जिय उत्तम पुण्य लह्यो सब ही ॥
हमको तुमरी शरणागत है । तुमरे गुनमें मन पागत है ॥११॥
प्रभु मोहिय आप सदा बसिये । जबलों वसु कर्म नहीं नसिये ॥
तबलों तुम ध्यान हिये वरतों । तबलों श्रुतचिंतन चित्त रतों ॥१२॥

तबलों व्रत चारित चाहतु हों। तबलों शुभ भाव सुगाहतु हों।
तबलों सतसंगति नित्त रहौ। तबलौं मम संजम चित्तगहौ ॥१३॥
जबलौं नहिं नाश करौं अरिकों। शिवनारि वरों समता धरिकों॥
यह द्यो तबलों हमको जिनजी। हम जाचतु हैं इतनी सुनजी ॥१४

घत्ताः—श्रीवीरजिनेशा नमितसुरेशा, नागनरेशा भक्तिभरा।
'वृन्दावन' ध्यावै, विघननशावै, वांछित पावै शर्म वरा ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेंद्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- श्रीसनमतिके जुगलपद, जो पूजै धरि प्रीत।
"वृन्दावन" सो चतुर नर, लहै मुक्तिनवनीत ॥ १६ ॥

इत्याशीर्वाद (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

[इति श्रीवर्द्धमान जिनपूजा समाप्ता ॥२४॥

श्रीसमुच्चय अर्घ

तोटक।

सुनिये जिन राज त्रिलोक धनी। तुममें जितने गुन हैं तितनी॥

कहि कौन सकै मुखसों सब ही । तिहिं पूजतु हौं गहि अर्घ यही ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि वीरान्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

ऋषभ देवको आदिअंत, श्रीवर्द्धमान जिनवर सुखकार ।
तिनके चरणकमलको पूजै, जो प्राणी गुनमाल उचार ॥
ताके पुत्रमित्रधन जोबन, सुखसमाजगुन मिलै अपार ।
सुरपदभोगभोगि चक्री ह्वै, अनुक्रम लहै मोक्षपद सार ॥ २ ॥

इत्याशीर्वादः ।

.·. कवि नामग्रामादि परिचय .·.

काशीजीमें काशीनाथ नन्हूंजी, अनंतराम, मूलचन्द, आढतसुराम आदि जानियौ ।
सज्जन अनेक तहां धर्मचन्दजीको नन्द, वृंदावन अग्रवाल गोल गोती जानियौ ॥
तानें रचे पाठ पाय मन्नालालको सहाय, बालबुद्धि अनुसार सुनो सरधानियौ ।
यामें भूलचूक होय ताहि शोध शुद्ध कीज्यो, मोहि अलपज्ञ जानि छिमा उर आनियौ ॥

॥ इति श्री कविवरवृन्दावनकृत श्रीवर्तमानजिनचतुर्विंशति जिनपूजा समाप्त ॥

संवत १८७५ कार्तिककृष्णा १५ गुरुवारको यह पुस्तक पूर्ण भया । लिखितं वृन्दावनेन

—इति—